

हिंदी विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग (झारखण्ड)



पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) – 2020
चार वर्षीय स्नातक हिंदी पाठ्यक्रम (FYUGP)
2025

पाठ्यक्रम समिति

क्र० सं०	नाम/पदनाम एवं पता	दायित्व	हस्ताक्षर
1.	डा० कृष्ण कुमार गुप्ता, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग	अध्यक्ष	
2.	प्रो० (डा०) सुधीर प्रताप सिंह, भारतीय भाषा अध्ययन केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	बाह्य विशेषज्ञ	
3.	प्रो० (डा०) जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, हिंदी विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	बाह्य विशेषज्ञ	
4.	डा० केदार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग	सदस्य	
5.	डा० अनुज कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रभारी प्राचार्य, गिरिडीह महाविद्यालय, गिरिडीह	सदस्य	
6.	डा० सुबोध कुमार सिंह 'शिवगीत', एसिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग	सदस्य	
7.	डा० सुनील कुमार दुबे, एसिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग	सदस्य	
8.	डा० राजू राम, एसिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग	सदस्य	
9.	डा० पार्वती कच्छप, एसिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, संत कोलम्बा महाविद्यालय, हजारीबाग	सदस्य	
10.	डा० संध्या कुमारी, एसिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, आदर्श महाविद्यालय, राजधनवार	सदस्य	
11.	डा० कनक रागिनी, एसिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, मार्खम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, हजारीबाग	सदस्य	
12.	प्रो० (डा०) मिथिलेश कुमार सिंह, संकायाध्यक्ष, मानविकी, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग	आमंत्रित सदस्य	
13.	डा० संध्या प्रेम, एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रभारी प्राचार्य, मार्खम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, हजारीबाग	आमंत्रित सदस्य	

प्रस्तावना

सा विद्या या विमुक्तये

— विष्णुपुराण

झड़ गए पंख, विषदंत झड़े,
पशुता का झड़ना बाकी है।
ऊपर—ऊपर तन संवर गये,
मन का संवरना बाकी है।

— दिनकर

प्रस्तुत पाठ्यक्रम प्राचीन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में तैयार किया गया है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करना वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य है। इसी को ध्यान में रखकर एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

भाषा का प्रयोग दो रूपों में किया जाता है — बोलचाल तथा लिखित रूप में। बोलचाल की भाषा का मतलब दैनिक प्रयोग की भाषा से है। इसमें व्यक्तिगत रचनात्मकता का अभाव होता है। यह सामाजिक रचनात्मकता द्वारा निर्मित होती है। इस कारण इसमें सामाजिक—सांस्कृतिक रिश्तों की प्रगाढ़ता होती है। लिखित भाषा, बोल—चाल की भाषा से थोड़ी भिन्न होती है। मौखिक भाषा जब लिखित रूप में प्रयुक्त होती है तब गंभीर हो जाती है, विषय के अनुरूप उसमें परिवर्तन हो जाता है।

अधिगम परिणाम (व्यावहारिक ज्ञान) —

लिखित भाषा का प्रयोग केवल साहित्य के लिए ही नहीं होता। कार्यालय, शास्त्र, विज्ञान, कला, संचार आदि के लिए भी इसका प्रयोग अपेक्षित है। कार्यालय, विज्ञान, शास्त्र, संचार आदि की भाषा से साहित्य की भाषा भिन्न होती है। साहित्येतर विषयों की भाषा ज्यादा वैचारिक, विश्लेषणात्मक तथा सूचनात्मक होती है। इसमें मानवीय संवेदना, मानवीय मूल्यों की दरकार नहीं होती, किन्तु साहित्यिक भाषा में मानवीय संवेदना, मानवीय मूल्यों के साथ—साथ ज्ञान का विशाल भंडार होता है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रधान शिक्षा के इस युग में जहाँ मानवीय संवेदनाएँ मरती जा रही हैं, मानव मूल्य विनष्ट होते जा रहे हैं, वहीं बोलचाल की हिंदी और साहित्य की भाषा हिंदी अपने हजार—हजार हाथों से विश्व मानव मूल्यों के टूटन को, मरती हुई संवेदना को रोक रखती है तथा मानव के सर्वांगीण विकास में अहम् भूमिका निभाती है।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के निर्देशानुसार विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड की हिंदी पाठ्यक्रम समिति ने **NEP-2020** को रुचि केन्द्रित सेमेस्टर

पद्धति पर आधारित चार वर्षीय स्नातक कक्षाओं के लिए अपने पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय आत्मा की धरोहर, मानवीय मूल्यों एवं संवेदनाओं से परिपूर्ण ऐसी ही हिंदी भाषा एवं साहित्य के महत्वपूर्ण संदर्भों एवं हिस्सों को निर्धारित किया है।

पाठ्य-कार्यक्रम का अधिगम परिणाम —

स्नातक पाठ्यक्रम के विभिन्न समसत्रों के लिए एक ओर जहाँ हिंदी साहित्य के इतिहास का आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के विभिन्न खंडों को रखा गया है, वहीं उस काल खंड के महान कवियों, लेखकों एवं उनकी महत्वपूर्ण कृतियों को भी स्थान दिया गया है। वैकल्पिक पाठ्यक्रम (ELECTIVE COURSE) के अंतर्गत विषय संबंधी ज्ञान, आधुनिक भारतीय भाषा (अनिवार्य) कौशल विकास पाठ्यक्रम (ABILITY ENHANCEMENT COURSES) तथा संप्रेषण कौशल (COMMUNICATION SKILLS) के पाठ्यक्रम में भी हिंदी साहित्य की महान विभूतियों की विविध विधाओं की महत्वपूर्ण रचनाओं को रखा गया है। AEC तथा संप्रेषण कौशल से सम्बद्ध पाठ्यक्रम में निबंध, भाषा, व्याकरण, पत्रकारिता के भी कुछ हिस्सों को अनिवार्य बनाया गया है। ये सब मिलकर स्नातक पाठ्यक्रम-साख रूप रेखा (CCFUP) के उद्देश्यों को पूर्ण करते हैं।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया —

प्रत्येक भाषा-साहित्य एवं देश का अपना इतिहास होता है। यह अनेक कालखंडों में विभाजित होता है। प्रत्येक कालखंड की अलग-अलग, अपनी-अपनी परिस्थितियाँ होती हैं। राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, आंतरिक एवं बाह्य परिवेश होते हैं। इतिहास का अध्ययन इन्हीं प्राचीन भाषा, साहित्य, सभ्यता, संस्कृति आदि को जानने के लिए आवश्यक होता है, वहीं सृजनात्मक साहित्य मानवमूल्यों में अभिवृद्धि कर व्यक्ति को संवेदनशील बनाकर, उसमें भाषिक दक्षता प्रदान करता है : सौन्दर्यबोध उत्पन्न करता है तथा देश की कामकाजी व्यवस्था के अनुकूल बनाता है। हिंदी आज न सिर्फ राष्ट्रीय गुणवत्ता और संस्कार-संस्कृति की भाषा है वरन विश्वग्राम की एक महती रोजगारोन्मुख भाषा है जिसे जानने, समझने और अपनाने वालों की संख्या वैश्विक स्तर पर अव्वल है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित प्रक्रियाओं को समाहित किया जाएगा—

वाद-विवाद

प्रश्नोत्तरी

संसदीय प्रणाली

वक्तृत्व व लेखन कौशल विकास के विविध आयामों के उपयोग।

अध्यक्ष,
हिंदी पाठ्यक्रम समिति,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग (झारखण्ड)

अनुक्रमणिका

S. No.	SEM	Major	TITLE	Credit	Page No.
1.	SEM-1	MJ-1	हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से मध्यकाल तक)	4	7-8
2.	SEM-2	MJ-2	हिंदी कविता (आदिकाल और मध्यकाल)	4	12-13
3.	SEM-3	MJ-3	हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल से अब तक)	4	17-18
4.		MJ-4	हिंदी कविता (भारतेन्दु युग से नई कविता तक)	4	19-20
5.	SEM-4	MJ-5	भारतीय ज्ञान परंपरा	4	24-25
6.		MJ-6	समकालीन हिंदी कविता	4	26
7.		MJ-7	हिंदी कहानी	4	27
8.	SEM-5	MJ-8	हिन्दी नाटक, एकांकी और रंगमंच	4	31-32
9.		MJ-9	हिंदी आलोचना	4	33-34
10.		MJ-10	हिंदी उपन्यास	4	35
11.		MJ-11	भारतीय काव्यशास्त्र	4	36-37
12.	SEM-6	MJ-12	पाश्चात्य काव्य शास्त्र	4	40-41
13.		MJ-13	हिंदी भाषा और भाषा विज्ञान	4	42
14.		MJ-14	कथेतर गद्य साहित्य	4	43-44
15.		MJ-15	प्रयोजन मूलक हिंदी	4	45-46
16.	SEM-7	MJ-16	अनुसंधान प्रविधि (Research Methodology)	4	49-50
17.		MJ-17	हिंदी साहित्य में भारतबोध	4	51-52
18.		MJ-18	झारखण्ड का हिंदी साहित्य	4	53-54
19.	SEM-8	MJ-19	भारतीय साहित्य	4	61
20.		MJ-20	जनसंचार और मीडिया के विविध रूप	4	62-63

S. No.	Advance Major	SEM	TITLE	Credit	Page No.
1.	AMJ-1	SEM-7	प्रयोजनमूलक हिंदी अथवा हिंदी उपन्यास	4	56-57
2.	AMJ-2	SEM-8	अनुवाद विज्ञान अथवा हिंदी कहानी	4	65-66
3.	AMJ-3	SEM-8	जनसंचार अथवा हिंदी नाटक	4	67-68

S. No.	RC	SEM	TITLE	Credit	Page No.
1.	RC-1	SEM-7	शोध प्रस्ताव-योजना एवं तकनीक	4	58-59
2.	RC-2	SEM-8	RESEARCH INTERNSHIP/ FIELD WORK/PROJECT/ DISSERTATION/ THESIS	8	69-70

S. No.	SEM	ELECTIVE	TITLE	Credit	Page No.
1.	SEM-1&2	AC – 1 & AC - 2	आधुनिक गद्य साहित्य	4	10/15
2.	SEM-3&4	EC-1	आधुनिक हिंदी काव्य	4	22/28
3.	SEM-5&6	EC-2	राजभाषा व प्रयोजनमूलक हिंदी	4	38/47
4.	SEM-7&8	EC-3	कार्यालयी हिन्दी	4	55/64

S. No.	SEM	ELECTIVE	TITLE	Credit	Page No.
1.	SEM-1&2	AEC – 1 & AEC – 2	लेखन कौशल	2	9/14
2.	SEM-03	AEC – 3	सम्प्रेषण कौशल	2	21
3.	SEM-04	AEC – 4	भाषायी कौशल	2	29

प्रथम समसत्र (First Semester)

सामान्य निर्देश/अंक विभाजन

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

1. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
3. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
4. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'ख' –	03 X 15 =	45 अंक
कुल –		50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक – 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

1. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
4. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
5. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय) –	02 X 05 =	10 अंक
खंड 'ख' –	04 X 15 =	60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –		20 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति –		05 अंक
कुल –		100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

कोड – MJ - 1

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- हिंदी साहित्य के इतिहास की प्रमुख प्रवृत्तियों और काल विभाजन से अवगत कराना।
- साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विकास-यात्रा को समझाना।
- काव्य, गद्य, और लोक परंपराओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित कराना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और ऐतिहासिक बोध विकसित करना।
- साहित्य के साथ-साथ भाषा, समाज और संस्कृति के संबंधों की समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- विद्यार्थी 11वीं शताब्दी से लेकर मध्यकाल के पूर्वार्द्ध तक के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक संदर्भों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- हिंदी साहित्य के प्रारंभिक और विकासात्मक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य के साहित्यकारों और उनकी रचनाओं के बारे में जान सकेंगे।
- हिंदी के भावगत, भाषागत और शैलीगत विकास से परिचित हो सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 –

- साहित्य का इतिहास दर्शन
 - हिंदी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा
 - हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन और नामकरण
- 01 क्रेडिट

इकाई 2 – आदिकाल

- आदिकाल का नामकरण
 - आदिकालीन साहित्य-पृष्ठभूमि और प्रवृत्तियाँ
 - सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य और जैन साहित्य
 - रासो काव्य परंपरा
 - लौकिक साहित्य
- 01 क्रेडिट

इकाई 3 – भक्तिकाव्य

- भक्ति – आंदोलन और उसका अखिल भारतीय स्वरूप
 - भक्ति साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि
 - भक्तिकाल की धाराएँ –
 1. निर्गुण धारा (ज्ञानाश्रयी शाखा, प्रेममार्गी सूफी शाखा)
 2. सगुण धारा (रामभक्ति शाखा, कृष्णभक्ति शाखा)
- 01 क्रेडिट

इकाई 4 – रीतिकाल

- रीतिकालीन परिस्थितियाँ और पृष्ठभूमि
- रीतिकाल के नामकरण की समस्याएँ
- साहित्य, संगीत एवं कलाओं की स्थिति
- रीतिकालीन काव्य-प्रवृत्तियाँ :
 - रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त काव्य
 - वीरकाव्य, भक्तिकाव्य और नीतिकाव्य

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल
- हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ० नगेन्द्र एवं डॉ० हरदयाल
- आदिकाल की भूमिका, हजारी प्रसाद द्विवेदी
- मध्यकालीन काव्य चिंतन और संवेदना, डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय।
- कबीर की विचारधारा, डॉ० गोविंद त्रिगुणायत ।
- विद्यापति, डॉ० शिवप्रसाद सिंह।
- जायसी, डॉ० विजयदेव नारायण साही।
- सूर और उनका साहित्य, डॉ० हरिवंशलाल शर्मा।
- मध्यकालीन काव्य वैभव, डॉ० शीतला प्रसाद दुबे।
- तुलसी काव्य मीमांसा, डॉ० उदयभानु सिंह।
- कबीर का रहस्यवाद, डॉ० राजकुमार वर्मा।
- तुलसी और उनका युग, डॉ० राजपति दीक्षित।
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कृष्ण काव्य : स्वरूप और सीमाएँ, डॉ० सुबोध कुमार सिंह, प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली।
- विषयनिष्ठ वस्तुनिष्ठ हिंदी : कल और आज, डॉ० केदार सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

(प्रथम समसत्र अथवा द्वितीय समसत्र)

कोड – AEC – 1 & AEC – 2

अंक – 50

क्रेडिट – 02

समय – 02 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी ।
- व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे ।
- विद्यार्थी लेखन कला सीख सकेंगे ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - लेखन कौशल—लेखन—अर्थ, विशेषताएं, महत्व एवं प्रकार, मीडिया लेखन (समाचार, सम्पादकीय, फीचर, संपादक के नाम पत्र आदि), संवाद लेखन, जीवन वृत्त (बायोडाटा) – 01 क्रेडिट

इकाई 2 - प्रयोजनमूलक हिंदी—सामान्य परिचय
टिप्पण, प्रारूपण, प्रतिवेदन, ज्ञापन, अनुवाद, संक्षेपण, पल्लवन – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध परिदृश्य – पवन अग्रवाल, अलका प्रकाशन, कानपुर
- हिंदी प्रयोग – रामचंद्र वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- अच्छी हिंदी – जगदीश प्रसाद कौशिक, साहित्यागार, जयपुर
- हिंदी व्याकरण – बासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना
- संचार माध्यम लेखन – गौरीशंकर रैणा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

(प्रथम समसत्र अथवा द्वितीय समसत्र)

कोड – AC – 1 & AC - 2

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में संवाद –कला एवं वक्तृत्व–कला का विकास।
- नाट्य मंचन के माध्यम से विद्यार्थियों में अभिनय–कला का विकास।
- कथा–साहित्य व निबंध के माध्यम से विद्यार्थियों में रचनात्मक विकास और सृजन धर्म का विकास होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1	हिंदी नाटक का उद्भव और विकास।	– 01 क्रेडिट
इकाई – 2	हिंदी उपन्यास का उद्भव और विकास।	– 01 क्रेडिट
इकाई – 3	हिंदी कहानी का उद्भव और विकास।	– 01 क्रेडिट
इकाई – 4	हिंदी गद्य विधाओं का उद्भव और विकास : जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र।	– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी कहानी का विकास, मधुरेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिंदी नाटक उद्भव और विकास, डॉ० दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस
- हिंदी निबंध, प्रभाकर माचवे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ० बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (भाग – 2), गणपति चंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- हिंदी साहित्य का इतिहास, सं० डॉ० नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा
- विषयनिष्ठ वस्तुनिष्ठ हिंदी : कल और आज, डॉ० केदार सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

द्वितीय – समसत्र (Second Semester)

सामान्य निर्देश/अंक विभाजन

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

1. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
3. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
4. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'ख' –	03 X 15 =	45 अंक
कुल –		50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक – 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

1. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
4. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
5. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय) –	02 X 05 =	10 अंक
खंड 'ख' –	04 X 15 =	60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –		20 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति –		05 अंक
कुल –		100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

कोड – MJ - 2

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- हिंदी कविता की आदिकालीन और मध्यकालीन परंपराओं से परिचित कराना।
- कविताओं के माध्यम से 11वीं से 19वीं शताब्दी के समाज, संस्कृति, धर्म और राजनीति को समझाना।
- प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं के अध्ययन द्वारा काव्यगत विशेषताओं का ज्ञान कराना।
- भक्ति, रीतिकालीन और लोकधारा की काव्य परंपरा से जोड़ना।
- काव्य अध्ययन में आलोचनात्मक दृष्टि और रसास्वादन की क्षमता विकसित करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- विद्यार्थियों को भारतवर्ष की 17वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य आदि का ज्ञान होगा।
- इस काल के साहित्यकार और उनकी रचनाओं से वे परिचित हो सकेंगे।
- इस काल के साहित्य का भावात्मक और राजसत्तात्मक प्रभाव का ज्ञान प्राप्त होगा।
- इससे सृजन के काव्य रूप का ज्ञान प्राप्त होगा।
- इससे साहित्य सृजन के आधार हिंदी भाषा और मौलिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1

- चन्द्रवरदाई – पृथ्वीराज रासो – कनकवज्र समय (षडशतक वर्णन)
- विद्यापति – वंदना, राधा की वंदना

– 01 क्रेडिट

इकाई – 2

- कबीर – साखी (संख्या– 1,2,6,7 और 10)
पद (संख्या– 160 से 165)
- जायसी – मानसरोदक खण्ड

– 01 क्रेडिट

इकाई – 3

- सूरदास – अबिगत-गति कछु कहत न आवै
प्रभु मेरे औगुन चित न धरौ
कर गहि पग अंगुठा मुख मेलत
जसोदा हरि पालने झुलावै
आयो घोष बड़ो व्यापारी
आए जोग सिखावन पाँडे
- तुलसीदास – कवितावली के (पद सं०– 3,4 और 5)

– 01 क्रेडिट

इकाई – 4

- केशवदास – समझै बाला-बालकनि
चरन धरत चिंता करत
राजत रंच न दोषजुत

- बिहारीलाल – मेरी भव बाधा हरौ
जगतु जनायौ जिहिं सकलु
पाइ महावर दैन कौ नाइनि बैठी आइ
नहिं परागु नहिं मधुर मधु
कीनै हूँ कोरिक जतन अब कहि काढ़ै कौनु
- घनानन्द – सवैया – झलकै अति सुन्दर आनन गौर
कवित्त – वहै मुसक्यानि, वहै मृदु बतरानि, वहै

– 01 क्रेडिट

अनुशंसित ग्रंथ—

- हिंदी विभा (भाग-1) डॉ० कृष्ण कुमार गुप्ता, जयभारती प्रकाशन, कानपुर

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी में शृंगार परम्परा और महाकवि बिहारी – डॉ० गणपतिचंद्र गुप्त
- बिहारी का नवमूल्यांकन – डॉ० बच्चन सिंह
- देव और बिहारी – कृष्ण बिहारी मिश्र
- बिहारी की वाग्विभूति – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा – मनोहरलाल गौड़
- भूषण : साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन – भगवानदास तिवारी
- भूषण – राजमल बोरा
- रीतिकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन – राजकुमार वर्मा
- रीतिकाव्य की भूमिका – डॉ० नगेंद्र
- स्वर्ण मंजूषा – सं० नलिनविलोचन शर्मा एवं केसरी कुमार
- विषयनिष्ठ वस्तुनिष्ठ हिंदी : कल और आज, डॉ० केदार सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

(प्रथम समसत्र अथवा द्वितीय समसत्र)

कोड – AEC – 1 & AEC – 2

अंक – 50

क्रेडिट – 02

समय – 02 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी ।
- व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे ।
- विद्यार्थी लेखन कला सीख सकेंगे ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

- इकाई 1 - लेखन कौशल—लेखन—अर्थ, विशेषताएं, महत्व एवं प्रकार, मीडिया लेखन (समाचार, सम्पादकीय, फीचर, संपादक के नाम पत्र आदि), संवाद लेखन, जीवन वृत्त (बायोडाटा) – 01 क्रेडिट
- इकाई 2 - प्रयोजनमूलक हिंदी—सामान्य परिचय
टिप्पण, प्रारूपण, प्रतिवेदन, ज्ञापन, अनुवाद, संक्षेपण, पल्लवन – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध परिदृश्य – पवन अग्रवाल, अलका प्रकाशन, कानपुर
- हिंदी प्रयोग – रामचंद्र वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- अच्छी हिंदी – जगदीश प्रसाद कौशिक, साहित्यागार, जयपुर
- हिंदी व्याकरण – बासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना
- संचार माध्यम लेखन – गौरीशंकर रैणा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

(प्रथम समसत्र अथवा द्वितीय समसत्र)

कोड – AC – 1 & AC - 2

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में संवाद –कला एवं वक्तृत्व–कला का विकास।
- नाट्य मंचन के माध्यम से विद्यार्थियों में अभिनय–कला का विकास।
- कथा–साहित्य व निबंध के माध्यम से विद्यार्थियों में रचनात्मक विकास और सृजन धर्म का विकास होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1	हिंदी नाटक का उद्भव और विकास।	– 01 क्रेडिट
इकाई – 2	हिंदी उपन्यास का उद्भव और विकास।	– 01 क्रेडिट
इकाई – 3	हिंदी कहानी का उद्भव और विकास।	– 01 क्रेडिट
इकाई – 4	हिंदी गद्य विधाओं का उद्भव और विकास : जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र।	– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी कहानी का विकास, मधुरेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिंदी नाटक उद्भव और विकास, डॉ० दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस
- हिंदी निबंध, प्रभाकर माचवे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिंदी कहानी का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ० बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (भाग – 2), गणपति चंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- हिंदी साहित्य का इतिहास, सं० डॉ० नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा
- विषयनिष्ठ वस्तुनिष्ठ हिंदी : कल और आज, डॉ० केदार सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

तृतीय समसत्र (Third Semester)

सामान्य निर्देश/अंक

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

1. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
3. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
4. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 = 05 अंक
खंड 'ख' –	03 X 15 = 45 अंक
कुल –	50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक – 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

1. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
4. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
5. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 = 05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय) –	02 X 05 = 10 अंक
खंड 'ख' –	04 X 15 = 60 अंक
	75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –	20 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति –	05 अंक
कुल –	100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- आधुनिक काल से अबतक के विभिन्न कालखंडों की पृष्ठभूमि को समझना।
- प्रत्येक युग के प्रमुख साहित्यकारों और उनकी कृतियों का अध्ययन करना।
- अलग-अलग साहित्यिक आंदोलनों व प्रवृत्तियों को पहचानना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करना।
- छात्रों को साहित्य के अध्ययन में अनुसंधान और व्याख्या संबंधी कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- इस पाठ के तीन खंड होंगे—भारतेंदु युगीन कविता, द्विवेदी युगीन कविता और छायावादी कविता—इस प्रकार 20वीं शताब्दी की शुरुआत के कुछ पूर्व से ही इस पाठ में विद्यार्थियों को कविता के स्वरूप का ज्ञान होगा। छायावादी कविता के काल तक आते-आते कविता की भाषा—शिल्प और संवेदना के क्रमिक विकास को विद्यार्थी जान सकेंगे।
- भारतेंदु युग से छायावाद तक के काल की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों एवं परिवेश से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
- तत्कालीन राजनीति, सांस्कृतिक आंदोलनों एवं उनके साहित्यिक रूपांतरण के बारे में जान सकेंगे।
- राष्ट्रीय नवजागरण के परिदृश्य से परिचित हो सकेंगे।
- ब्रजभाषा से क्रमशः खड़ी बोली के कविता भाषा बनने और निखरने के इतिहास से परिचित हो सकेंगे।
- छायावादी काव्य संवेदना और अभिव्यक्ति सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे।
- आख्यानों की आधुनिकता से अवगत होंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1

- मध्यकालीन बोध और आधुनिक बोध
- नवजागरण की पृष्ठभूमि और परिस्थितियाँ
- आधुनिकता : अवधारणा एवं स्वरूप
- भारतेंदु युगीन परिवेश : सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवेश
- महावीर प्रसाद द्विवेदी : हिंदी पत्रकारिता और खड़ी बोली आंदोलन
- स्वाधीनता आंदोलन और नवजागरणकालीन चेतना का उत्कर्ष, विभिन्न वैचारिक मत और हिंदी साहित्य से उनका संबंध

– 01 क्रेडिट

इकाई – 2 काव्य प्रवृत्तियाँ : सामान्य परिचय

- भारतेन्दु युगीन काव्य
- द्विवेदी युगीन काव्य
- छायावाद
- प्रगतिवाद
- प्रयोगवाद
- नई कविता
- अकविता
- समकालीन कविता

– 01 क्रेडिट

इकाई – 3 हिंदी गद्य का उद्भव और विकास

- कहानी
- उपन्यास
- नाटक
- निबंध
- अन्य गद्य विधाएँ (संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा जीवनी, रिपोर्टाज, पत्र, डायरी, साक्षात्कर, व्यंग्य आदि)

इकाई – 4 हिंदी आलोचना और अस्मितामूलक विमर्श

- हिंदी आलोचना का उद्भव और विकास
- अस्मितामूलक विमर्श – दलित, स्त्री और आदिवासी
- हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- छायावाद का पतन, देवराज उपध्याय।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, डॉ० रामविलास शर्मा।
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण, डॉ० रामविलास शर्मा।
- नवजागरण की समस्याएं, डॉ० रामविलास शर्मा।
- छायावाद की प्रासंगिकता, रमेशचंद्र शाह।
- द्विवेदीयुगीन छायावादी काव्य, डॉ० सुनील कुमार दुबे, आयुष्मान, नई दिल्ली।
- विषयनिष्ठ वस्तुनिष्ठ हिंदी : कल और आज, डॉ० केदार सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
- प्रगतिवाद और नागार्जुन के उपन्यास, डॉ० कृष्ण कुमार गुप्ता, क्लासिकल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को भारतेन्दु युग से लेकर नई कविता तक हिंदी काव्य की ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि से परिचित कराना।
- प्रमुख कवियों और उनकी कृतियों के माध्यम से युगीन चेतना, समाज सुधार और राष्ट्रभावना को समझना।
- काव्य प्रवृत्तियों, आंदोलनों और शैलियों के विकासक्रम को स्पष्ट करना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और साहित्यिक संवेदनशीलता का विचार करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- विद्यार्थी भारतेन्दु युग से लेकर नई कविता तक हिंदी काव्य की ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि से परिचित हो सकेंगे।
- प्रमुख कवियों और उनकी कृतियों के माध्यम से युगीन चेतना, समाज सुधार और राष्ट्रभावना को समझ सकेंगे।
- काव्य प्रवृत्तियों, आंदोलनों और शैलियों के विकासक्रम स्पष्ट हो पाएगा।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और साहित्यिक संवेदनाशीलता का विकास होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – मुकरियाँ – सब गुरु जन को बुरो बतावै,
सतएँ अठएँ मों घर आवै
- हरिऔध – प्रिय प्रवास (प्रथम सर्ग – पद सं० – 1 से 10)
- मैथिलीशरण गुप्त – भारत भारती भविष्य खण्ड (1992-98)
- रामनरेश त्रिपाठी – पथिक : प्रथम सर्ग से प्रतिक्षण नूतन वेश बनाकर अतिशय सुंदर हैं

– 01 क्रेडिट

इकाई – 2

- जयशंकर प्रसाद – पेशोला की प्रतिध्वनि, हिमाद्रि तुंग शृंग से
- सुमित्रानंदन पंत – प्रथम रश्मि, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र, भारत माता ग्रामवासिनी
- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला – संध्या सुंदरी, तोड़ती पत्थर, बांधो न नाव इस ठांव बंधु
- महादेवी वर्मा – मैं नीर भरी दुःख की बदली, पंथ होने दो अपरिचित

– 01 क्रेडिट

इकाई – 3

- सुभद्रा कुमारी चौहान – वीरों का कैसा हो वसंत, दुकरा दो या प्यार करो,
जालियांवाले बाग में वसंत
- हरिवंश राय बच्चन – मुझे पुकार लो, जो बीत गई सो बात गई, अग्निपथ
- रामधारी सिंह दिनकर – कलम आज उनकी जय बोल, हिमालय
- माखनलाल चतुर्वेदी – पुष्प की अभिलाषा, कैदी और कोकिला

– 01 क्रेडिट

- अज्ञेय — नदी के द्वीप, कलगी बाजरे की
- मुक्तिबोध — मुझे कदम-कदम पर, ब्रह्मराक्षस
- नागार्जुन — अकाल और उसके बाद, कालिदास
- रघुवीर सहाय — रामदास, इमरजेंसी
- केदारनाथ सिंह — बनारस, महानगर में कवि

सहायक ग्रंथ —

- नयी कविता : सीमाएँ और संभावनाएँ, गिरिजाकुमार माथुर।
- नयी कविता : स्वरूप एवं समस्याएँ, जगदीश गुप्त।
- समकालीन हिंदी साहित्य : विविध परिदृश्य, रामस्वरूप चतुर्वेदी।
- आधुनिक हिंदी साहित्य : विविध आयाम, रामचंद्र तिवारी।
- प्रगतिवाद, रामविलास शर्मा।
- प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ, रामविलास शर्मा।
- विषयनिष्ठ वस्तुनिष्ठ हिंदी : कल और आज, डॉ० केदार सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

कोड – AEC – 3

अंक – 50

क्रेडिट – 02

समय – 02 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी।
- विद्यार्थियों में औपचारिक, अनौपचारिक विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी।
- व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे।
- विद्यार्थी पत्र के माध्यम से लेखन कला सीख सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – पत्र-लेखन (औपचारिक, अनौपचारिक)
निबंध की परिभाषा एवं प्रकार
निबंध लेखन कौशल (विविध विषय)
विज्ञापन लेखन

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 – लिंग निर्णय, मुहावरे, पर्यायवाची शब्द, अनेक शब्दों के बदले एक शब्द
कर्ता के 'ने' चिह्न का प्रयोग, वाक्य संशोधन

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी व्याकरण – उमेश चंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- सरल हिंदी व्याकरण – वासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना

कोड – EC – 1

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- छायावादी काव्य संवेदना और अभिव्यक्ति सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे ।
- उत्तर छायावाद युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों एवं विसंगतियों से उपजे काव्यान्दोलनों से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1 छायावादी काव्य –	जयशंकर प्रसाद – जाग री, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला – बादल राग, सुमित्रा नंदन पंत – भारत माता, महादेवी वर्मा – मधुर-मधुर मेरे दीपक जल	– 01 क्रेडिट
इकाई – 2 छायावादोत्तर काव्य –	हरिवंश राय बच्चन – अंधेरे का दीपक अज्ञेय – मैं वहां हूं मुक्तिबोध – भूल-गलती नागार्जुन – हटे दनुजदल, मिटे अमंगल	– 01 क्रेडिट
इकाई – 3 रश्मिरथी – रामधारी सिंह दिनकर		– 01 क्रेडिट
इकाई – 4 समकालीन प्रमुख कविताएँ –	(क) गोपाल सिंह 'नेपाली' – हिंदी है भारत की बोली', तू चिंगारी बन उड़ री (ख) गोपालदास नीरज – स्वप्न झरे फूल से (ग) दुष्यंत कुमार – हो गयी है पीर पर्वत सी (घ) सोहन लाल द्विवेदी – कोशिश करने वालों की हार नहीं होती	– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- मेरी इक्यावन कविताएं—सं. चन्द्रिका प्र.शर्मा, किताबघर
- हिन्दी काव्य यात्रा—सं. सत्य प्रकाश मिश्र, लोकभारती

चतुर्थ समसत्र (Fourth Semester)

सामान्य निर्देश/अंक विभाजन

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

1. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
3. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
4. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'ख' –	03 X 15 =	45 अंक
कुल –		50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक – 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

1. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
4. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
5. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय) –	02 X 05 =	10 अंक
खंड 'ख' –	04 X 15 =	60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –		20 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति –		05 अंक
कुल –		100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

कोड – MJ - 5

अंक – 100 (वाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपरा से अवगत कराना।
- प्राचीन भारतीय चिंतन, संस्कृति एवं दर्शन के महत्व से जोड़ना।
- गीता दर्शन, राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता के प्रति जागरूक होना।
- भारतीय संस्कृति में निहित नैतिकता, मानवता और आध्यात्मिकता को स्पष्ट करना।
- अतीत की गौरवशाली उपलब्धियों से प्रेरणा लेकर वर्तमान एवं भविष्य का निर्माण करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- प्राचीन भारतीय ज्ञान की उपलब्धियों से जुड़ना
- राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता की भावना से जुड़ाव
- भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की महत्ता का ज्ञान
- भक्ति एवं दर्शन का सम्यक ज्ञान
- चरित्र, नैतिकता एवं मानवता का विस्तार
- अतीत की गौरव गाथा के माध्यम से उज्ज्वल भविष्य का निर्माण

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - भारतीय ज्ञान परंपरा, स्वरूप, विस्तार, व्यापकता

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 - भारतीय दर्शन : एक परिचय

- न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदांत
- भक्ति आंदोलन

– 01 क्रेडिट

इकाई 3 -

- गीता दर्शन
- जातक कथाएँ
- देशज/लोक ज्ञान परंपरा – घाघ-भड्डरी

– 01 क्रेडिट

इकाई 4 - प्रमुख विचारक

- कौटिल्य
- विवेकानन्द
- महर्षि अरविन्द

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ

- भक्ति सिद्धांत, आशा गुप्त, लोकभारती, इलाहाबाद
- हिंदू धर्म: जीवन में सनातन की खोज, विद्यानिवास मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- सहज गीता, अरविंद कुमार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- हड़प्पा सभ्यता और वैदिक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- भारतीय दर्शन, वाचस्पति गैरोला, लोकभारती, इलाहाबाद
- भारतीय धर्मव्यवस्था, वाचस्पति गैरोला, लोकभारती, इलाहाबाद
- अद्वैत वेदांत संप्रदाय में ईश्वर, प्रतिमा अग्रवाल, लोकभारती, इलाहाबाद
- भारतीय धर्म और संस्कृति, राम जी उपाध्याय, लोकभारती, इलाहाबाद
- हिंदुओं के व्रत, पर्व और त्योहार, रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री, लोकभारती, इलाहाबाद
- सुबोध उपनिषद् सार, पुरुषोत्तम शास्त्री फड़के, लोकभारती, इलाहाबाद
- आचार्य वल्लभ और उनका दर्शन, राजलक्ष्मी वर्मा, लोकभारती, इलाहाबाद
- घाघ और भड्डरी – शुभम प्रकाशन, इलाहाबाद

कोड – MJ - 6

अंक – 100 (वाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों में समकालीन हिंदी कविता की समझ विकसित करना।
- विद्यार्थियों को समकालीन कवियों से अवगत कराना।
- विद्यार्थियों को समकालीन काव्य की विशेषता बताना।
- विद्यार्थियों में समकालीन कविता के प्रति रुचि जागृत करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- विद्यार्थियों में समकालीन हिंदी कविता की समझ विकसित होगी।
- विद्यार्थी समकालीन कवियों से अवगत हो सकेंगे।
- विद्यार्थी समकालीन काव्य की विशेषता जान सकेंगे।
- विद्यार्थियों में समकालीन कविता के प्रति रुचि जागृत होगी।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 -

- शमशेर बहादुर सिंह – बैल
- कुँवर नारायण – एक वृक्ष की हत्या
- राजकमल चौधरी – विघटन

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 -

- श्रीकांत वर्मा – उज्जयिनी का रास्ता
- विजेन्द्र – पिशाच
- धूमिल – किस्सा जनतंत्र

– 01 क्रेडिट

इकाई 3 -

- कैलाश वाजपेयी – भर्तृहरि
- राजेश जोशी – अधूरी कविताएँ
- अदम गोंडवी – मानवता का दर्द लिखेंगे

– 01 क्रेडिट

इकाई 4 -

- मंगलेश डबराल – पिता का हवाला
- अरुण कमल – यात्रा
- चन्द्रकान्त देवताले – माँ जब खाना परोसती थी

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ

- काव्य विभा – (सं०) डा० सुनील कुमार दुबे / डा० राजू राम, परिमल प्रकाशन, प्रयागराज

कोड – MJ – 07

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को हिंदी कथा साहित्य के विभिन्न आयामों से अवगत कराना।
- जीवन एवं सामाजिक यथार्थ को साहित्य के माध्यम से समझाना।
- रचनात्मकता, संवेदना एवं मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूक करना।
- विद्यार्थियों में साहित्यिक अभिरुचि और आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थी सम्पूर्ण मानवीय संवेदनाओं से परिचित होंगे।
- कथा साहित्य विद्यार्थियों को जीवन और जगत की वास्तविकताओं से परिचित करायेगा।
- कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में रचनात्मक विकास और सृजन धर्म का विकास होगा।
- कथा साहित्य के विभिन्न संदर्भों और घटनाओं से विद्यार्थियों को जीवन में गतिशील रहने की प्रेरणा मिलेगी।
- कथा साहित्य से विद्यार्थियों को गंभीर भावबोध को समझने का अवसर मिलेगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - कहानी – स्वरूप, विशेषता, तत्व और भेद

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 - चंद्रधर शर्मा गुलेरी – उसने कहा था
प्रेमचंद – पूस की रात
जयशंकर प्रसाद – आकाशदीप
जैनेन्द्र – जाह्नवी

– 01 क्रेडिट

इकाई 3 - रेणु – तीसरी कसम
ज्ञानरंजन – पिता
अज्ञेय – रोज (गैंग्रीन)
भीष्म साहनी – चीफ की दावत

– 01 क्रेडिट

इकाई 4 - अमरकांत – दोपहर का भोजन
मोहन राकेश – मलबे का मालिक
उषा प्रियम्बदा – वापसी
उदय प्रकाश – तिरिछ
ओमप्रकाश वाल्मीकि – घुसपैटिए

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- कहानी विभा – (सं०) डा० सुबोध सिंह शिवगीत, परिमल प्रकाशन, प्रयागराज
- साहित्य का स्वरूप – डा० नित्यानंद तिवारी, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

कोड – EC – 1

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- छायावादी काव्य संवेदना और अभिव्यक्ति सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे ।
- उत्तर छायावाद युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों एवं विसंगतियों से उपजे काव्यान्दोलनों से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1 छायावादी काव्य –	जयशंकर प्रसाद – जाग री, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला – बादल राग, सुमित्रा नंदन पंत – भारत माता, महादेवी वर्मा – मधुर-मधुर मेरे दीपक जल	– 01 क्रेडिट
इकाई – 2 छायावादोत्तर काव्य –	हरिवंश राय बच्चन – अंधेरे का दीपक, अज्ञेय – मैं वहां हूँ, मुक्तिबोध – भूल-गलती, नागार्जुन – हटे दनुजदल, मिटे अमंगल	– 01 क्रेडिट
इकाई – 3 रश्मिरथी – रामधारी सिंह दिनकर		– 01 क्रेडिट
इकाई – 4 समकालीन प्रमुख कविताएँ –	(क) अटल बिहारी बाजपेयी – हार नहीं मानूंगा (ख) गोपाल सिंह 'नेपाली' – हिंदी है भारत की बोली', तू चिंगारी बन उड़ री (ग) गोपालदास नीरज – स्वप्न झरे फूल से (घ) दुष्यंत कुमार – हो गयी है पीर पर्वत सी (ङ) सोहन लाल द्विवेदी – कोशिश करने वालों की हार नहीं होती	– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- मेरी इक्यावन कविताएं—सं. चन्द्रिका प्र.शर्मा, किताबघर
- हिन्दी काव्य यात्रा—सं. सत्य प्रकाश मिश्र, लोकभारती

कोड – AEC – 4

अंक – 50

क्रेडिट – 02

समय – 02 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे।
- विद्यार्थी लेखन कला सीख सकेंगे।
- भाषायी त्रुटियों को दूर कर सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - वर्ण, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय, वक्तृत्व कौशल

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 - कारक, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, वाक्य अनुच्छेद लेखन

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ

- प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध परिदृश्य – पवन अग्रवाल, अलका प्रकाशन, कानपुर
- हिंदी प्रयोग – रामचंद्र वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- अच्छी हिंदी – जगदीश प्रसाद कौशिक, साहित्यागार, जयपुर
- हिंदी व्याकरण – बासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना

पंचम समसत्र (Fifth Semester)

सामान्य निर्देश/अंक

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

1. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
3. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
4. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'ख' –	03 X 15 =	45 अंक
कुल –		50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक – 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

1. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
4. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
5. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय) –	02 X 05 =	10 अंक
खंड 'ख' –	04 X 15 =	60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –		20 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति –		05 अंक
कुल –		100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

कोड – MJ - 8

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- हिंदी, लोक नाटक एवं एकांकी के इतिहास से अवगत कराना।
- लोक नाट्य परंपरा की विविधता से परिचित कराना।
- समाज एवं राष्ट्र के प्रति विद्यार्थियों में समर्पण का भाव उत्पन्न करना।
- नाटकों के प्रति अभिरुचि पैदा करना।
- लोक रंग की परंपरा एवं रंगमंच के विभिन्न स्वरूपों से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- विद्यार्थी राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय चेतना को जान सकेंगे।
- रंगमंच क्या है और हिंदी रंगमंच की राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में क्या भूमिका रही है, जान सकेंगे।
- इस पाठ से विद्यार्थियों को अपने पूर्वजों के राष्ट्रप्रेम और उनमें निहित राष्ट्रीय चेतना का ज्ञान हो सकेगा।
- विद्यार्थी इस पाठ के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में स्वयं की भूमिका का चयन करने में समर्थ हो सकेंगे।
- जिनमें सृजनात्मक क्षमता होगी वे नयी रचनाओं यथा कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि का निर्माण कर सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – हिंदी नाटक और एकांकी का इतिहास एवं विकास
लोकनाट्य के विविध रूप

- रामलीला
- रासलीला
- बिदेसिया
- नुक्कड़
- भवाई
- कठपुतली
- छऊ
- यात्रा आदि

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 – नाटक

- चन्द्रगुप्त – जयशंकर

– 01 क्रेडिट

इकाई 3 – एकांकी

- उत्सर्ग – रामकुमार वर्मा
- तौलिए – उपेन्द्र नाथ अशक

– 01 क्रेडिट

इकाई 4 – एकांकी

- रंगमंच और उसके विविध रूप
- लोक रंग परंपरा एवं प्रभाव

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- रंगमंच, बलवंत गार्गी
- अंतरंग बहिरंग, देवेन्द्र राज अंकुर
- नाट्य विमर्श, मोहन राकेश
- नाट्य समीक्षा, डॉ० दशरथ ओझा
- रंगदर्शन, नेमिचंद्र जैन
- रंगमंच और नाटक की भूमिका, डॉ० लक्ष्मीनारायण
- समकालीन हिंदी रंगमंच और रंगभाषा, डॉ० आशीष त्रिपाठी

कोड – MJ - 09

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को हिंदी आलोचना का स्वरूप एवं परंपरा से अवगत कराना।
- आलोचना के विभिन्न चरण एवं विभिन्न आलोचकों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अवगत कराना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना।
- आलोचना के सैद्धांतिक एवं व्यापारिक पक्ष से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक विवेक/समीक्षात्मक दृष्टि का विकास होगा।
- भारतीय प्रतिश्रुति से उनका परिचय हो सकेगा।
- विद्यार्थियों में भाषा-शिक्षण के संस्कारों का विकास होगा।
- हिंदी आलोचकों के परिचय के माध्यम से राष्ट्रीय एकात्मक भाव का विकास एवं राष्ट्रीय हिंदी की स्वीकार्यता को संबल प्राप्त होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1 आलोचना : उद्भव और विकास

- हिंदी आलोचना का स्वरूप
 - विकास के विविध चरण-आरंभिक चरण, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग, समकालीन हिंदी आलोचना
- 01 क्रेडिट

इकाई – 2 हिंदी के प्रमुख आलोचक (1)

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
 - हजारी प्रसाद द्विवेदी
 - नगेन्द्र
- 01 क्रेडिट

इकाई – 3 हिंदी के प्रमुख आलोचक (2)

- मुक्तिबोध
 - रामविलास शर्मा
 - नामवर सिंह
- 01 क्रेडिट

इकाई – 4 हिंदी के प्रमुख आलोचक (3)

- अज्ञेय
 - विजयदेव नारायण शाही
 - मलयज
- 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- चिन्तामणि भाग – 1 – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- हिंदी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध भूमिकाएँ – संपादन – कृष्णदत्त पालीवाल
- आस्था कृे चरण – डॉ० नगेंद्र
- हिंदी जाति का साहित्य – रामविलास शर्मा
- हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- भारत की संत परंपरा और सामाजिक समरसता – डॉ० कृष्णगोपाल
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिंदी आलोचना – डॉ० रामविलास शर्मा
- हिंदी गद्य, विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- हिंदी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार – डॉ० रामचन्द्र तिवारी
- हिंदी आलोचना : कल और आज, पुस्तक भवन, नई दिल्ली – डॉ० केदार सिंह

कोड – MJ - 10

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को हिंदी उपन्यास के स्वरूप, विशेषता, तत्त्व और भेदों का ज्ञान कराना।
- प्रमुख उपन्यासकारों (प्रेमचंद, जैनेन्द्र कुमार, श्रीलाल शुक्ल, राधाकृष्ण) की कृतियों के अध्ययन से साहित्यिक परंपरा और विकास की समझ प्रदान करना।
- उपन्यास के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक मूल्यों को समझने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि, आलोचनात्मक दृष्टि और संवेदनशीलता का विकास करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थी सम्पूर्ण मानवीय संवेदनाओं से परिचित होंगे।
- कथा साहित्य विद्यार्थियों को जीवन और जगत की वास्तविकताओं से परिचित करायेगा।
- कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में रचनात्मक विकास और सृजन धर्म का विकास होगा।
- कथा साहित्य के विभिन्न संदर्भों और घटनाओं से विद्यार्थियों को जीवन में गतिशील रहने की प्रेरणा मिलेगी।
- कथा साहित्य से विद्यार्थियों को गंभीर भावबोध को समझने का अवसर मिलेगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – उपन्यास : स्वरूप, विशेषता, तत्त्व और भेद

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 – प्रेमचंद – कर्मभूमि

– 01 क्रेडिट

इकाई 3 – जैनेन्द्र कुमार – त्यागपत्र

– 01 क्रेडिट

इकाई 4 – श्रीलाल शुक्ल – रागदरबारी
राधाकृष्ण – रूपांतर

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

कोड – MJ - 11

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा और उसकी मूल अवधारणाओं से परिचित कराना।
- काव्य के लक्षण, हेतुओं, प्रयोगों तथा शब्दशक्ति आदि के माध्यम से काव्य की बुनियादी समझ प्रदान करना।
- रस, ध्वनि, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति और औचित्य जैसे प्रमुख काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों का व्यवस्थित अध्ययन कराना।
- विभिन्न आचार्यों के सिद्धांतों की विशेषताओं और भेदों से परिचित कराकर आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा से परिचित हो सकेंगे।
- काव्य के महत्वपूर्ण उपादानों से परिचित हो सकेंगे।
- काव्यशास्त्र के विभिन्न सम्प्रदायों की जानकारी होने पर विद्यार्थियों में काव्य का शास्त्रीय ज्ञान विकसित हो सकेगा।
- विद्यार्थी साहित्य सृजन के मूलाधार, सृजन की केंद्रीय चेतना और उसके विभिन्न प्रयोजनों को समझ सकेंगे।
- उनमें साहित्य सृजन की अभिरुचि पैदा हो सकेगी।
- विद्यार्थी कविता के मानकों को समझकर कविता का सही ढंग से विश्लेषण कर सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - भारतीय काव्य शास्त्र की परम्परा का सामान्य परिचय।

काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, शब्द शक्ति।

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 - काव्यशास्त्रीय सम्प्रदाय।

रस सिद्धांत : रस का स्वरूप और भेद, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण।

ध्वनि सिद्धांत : ध्वनि की परिभाषा, ध्वनि के भेद।

– 01 क्रेडिट

इकाई 3 - अलंकार सिद्धांत : परिभाषा, लक्षण, अलंकार के भेद।

रीति सिद्धांत : रीति का अर्थ, रीति के भेद।

– 01 क्रेडिट

इकाई 4 - वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद।

औचित्य सिद्धांत : औचित्य की अवधारणा, औचित्य के भेद।

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र ।
- रस सिद्धांत – स्वरूप विश्लेषण – डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित ।
- भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. कृष्णदेव शर्मा ।
- भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. उदयभानु सिंह ।
- भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. कृष्णदेव झारी ।
- भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी ।
- रस मीमांसा – आ. रामचंद्र शुक्ल ।
- काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र ।
- भारतीय काव्यशास्त्र : सुबोध विवेचन – सत्यदेव चौधरी ।

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त होगा ।
- विद्यार्थी भारत को एक सूत्र में बांधनेवाली हिंदी भाषा की विविध बोलियों से परिचित हो सकेंगे ।
- विद्यार्थियों को हिंदी की भाषिक इकाइयों दृश्य, ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा ।
- हिंदी के अर्थ-विकास की जानकारी प्राप्त हो सकेगी ।
- वैज्ञानिक और उपयोगी लिपि 'देवनागरी' का अपेक्षित ज्ञान प्राप्त होगा ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1 हिंदी भाषा का उद्भव और विकास ।

– 01 क्रेडिट

इकाई – 2 हिंदी की बोलियाँ – पूर्वी और पश्चिमी हिंदी ।

– 01 क्रेडिट

इकाई – 3 राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं संपर्कभाषा के रूप में हिंदी ।

– 01 क्रेडिट

इकाई – 4 प्रयोजनमूलक हिंदी, पारिभाषिक शब्दावली, अनुवाद प्रक्रिया ।

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ :-

- हिंदी भाषा, डॉ. हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, नई दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग, दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिंदी : उद्भव, विकास और रूप – डॉ. हरदेव बाहरी, किताब महल, प्रयागराज
- हिंदी भाषा का उद्भव और विकास – उदय नारायण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- हिंदी भाषा का इतिहास – भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएँ और समाधान, देवेन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका, कैलाश नाथ पांडेय, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- राजभाषा हिंदी, भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
- राष्ट्रभाषा हिंदी, राहुल सांकृत्यायन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

षष्ठ समसत्र (Sixth Semester)

सामान्य निर्देश/अंक

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

1. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
3. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
4. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'ख' –	03 X 15 =	45 अंक
कुल –		50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक – 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

1. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
4. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
5. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय) –	02 X 05 =	10 अंक
खंड 'ख' –	04 X 15 =	60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –		20 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति –		05 अंक
कुल –		100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को पाश्चात्य काव्यशास्त्र की प्रमुख परंपराओं और प्रवृत्तियों से परिचित कराना।
- प्लेटो, अरस्तू, लॉजाइनस, कोलरिज, टी.एस. एलियट तथा आई.ए. रिचर्ड्स आदि आचार्यों के मूल सिद्धांतों का व्यवस्थित अध्ययन कराना।
- काव्य, भाषा, कल्पना, फैंटेसी, वस्तुनिष्ठता, परंपरा, अनुकरण, निरपेक्षता आदि सैद्धांतिक अवधारणाओं की गहरी समझ विकसित करना।
- पाश्चात्य आलोचना की विविध दृष्टियों (शास्त्रीय, आधुनिकतावादी, उत्तर आधुनिकतावादी आदि) से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
- आधुनिक साहित्य, प्रतीकवाद, यथार्थवाद, मिथक और उत्तर आधुनिक विचारधारा की समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- विद्यार्थी पश्चिमी साहित्य चिंतन की परम्परा से परिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थियों में आलोचना दृष्टि विकसित होगी।
- वे भारतीय और पाश्चात्य आलोचना दृष्टियों का तुलनात्मक विवेचना कर सकेंगे।
- उन्हें आलोचना की नयी प्रणालियों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- उनमें साहित्य को समझने की दृष्टि विकसित हो सकेगी।

निर्धारित पाठ्यक्रम —

इकाई 1 - प्लेटो : काव्य संबंधी अवधारणाएं।

अरस्तू : अनुकरण संबंधी अवधारणा, विरेचन एवं त्रासदी संबंधी सिद्धांत। — 01 क्रेडिट

इकाई 2 - लॉजाइनस : उदात्त सिद्धांत।

वर्ड्सवर्थ : काव्य भाषा का सिद्धांत।

कॉलरिज : काव्य संबंधी अवधारणा, कल्पना और फैंटेसी। — 01 क्रेडिट

इकाई 3 - क्रोचे : अभिव्यंजनावाद।

टी.एस. एलियट : परंपरा और वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत,

वस्तुनिष्ठ सह सम्बन्ध। — 01 क्रेडिट

इकाई 4 - आई.ए. रिचर्ड्स : मूल्य सिद्धांत, सम्प्रेषण सिद्धांत।

वाद और सिद्धांत : आधुनिकतावाद, संरचनावाद, उत्तर आधुनिकतावाद,

कल्पना, बिम्ब, प्रतीक, फैंटेसी, यथार्थवाद, मिथक — 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त ।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ. बच्चन सिंह ।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेन्द्र नाथ शर्मा ।
- पाश्चात्य साहित्य चिंतन – निर्मला जैन ।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र – इतिहास, सिद्धांत और वाद – डॉ. भगीरथ मिश्र ।

कोड — MJ - 13

अंक — 100 (बाह्य — 75, आंतरिक — 25)

क्रेडिट — 04

समय — 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- छात्रों को हिंदी भाषा की उत्पत्ति, विकास और वर्तमान स्वरूप से परिचित कराना।
- भारतीय भाषाओं के परिवार, विशेषकर आर्यभाषा परिवार और आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के संबंध में ज्ञान प्रदान करना।
- हिंदी भाषा की ध्वनियों (स्वर, व्यंजन) का वैज्ञानिक अध्ययन कर छात्रों को ध्वनिविज्ञान का व्यावहारिक ज्ञान देना।
- शब्दविज्ञान के अंतर्गत शब्दों की उत्पत्ति, स्रोत और वर्गीकरण की जानकारी प्रदान करना।
- वाक्यविज्ञान के अंतर्गत वाक्य की परिभाषा, अनिवार्य तत्वों और संरचना का अध्ययन कराना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त होगा।
- विद्यार्थी भारत को एक सूत्र में बांधनेवाली हिंदी भाषा की विविध बोलियों से परिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थियों को हिंदी की भाषिक इकाइयों दृश्य, ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।
- हिंदी के अर्थ-विकास की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
- वैज्ञानिक और उपयोगी लिपि 'देवनागरी' का अपेक्षित ज्ञान प्राप्त होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम —

- इकाई 1 - हिंदी भाषा का उद्भव, विकास और वर्गीकरण
— 01 क्रेडिट
- इकाई 2 - आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और हिंदी
हिंदी भाषा की विविध बोलियाँ
— 01 क्रेडिट
- इकाई 3 - ध्वनि विज्ञान : परिभाषा, हिंदी स्वर एवं व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरण
शब्द विज्ञान : परिभाषा और स्रोत के आधार पर वर्गीकरण
वाक्य विज्ञान : परिभाषा, वाक्य के अनिवार्य तत्व और संरचना के आधार पर वर्गीकरण
— 01 क्रेडिट
- इकाई 4 - अर्थ विज्ञान : परिभाषा और अर्थ-विकास (परिवर्तन) की दिशाएँ एवं कारण।
नागरी लिपि का वर्तमान स्वरूप और वैज्ञानिकता, हिंदी का मानकीकरण। — 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ —

- भाषा विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी।
- भाषा विज्ञान की भूमिका, आ. देवेन्द्रनाथ शर्मा।
- हिंदी भाषा का उद्भव और विकास, डॉ. उदयनारायण तिवारी।
- भाषा और समाज, डॉ. रामविलास शर्मा।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य साहित्य की विविध विधाओं – संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत, रिपोर्टाज, पत्र लेखन, डायरी, व्यंग्य का गहन ज्ञान प्रदान करना।
- प्रमुख निबंधकारों (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, रामचन्द्र शुक्ल, सरदार पूर्ण सिंह, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि) की रचनाओं के माध्यम से गद्य के चिंतनशील, सांस्कृतिक और सामाजिक पक्ष को समझाना।
- प्रसिद्ध गद्य – रचनाकारों (सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, बलदेव सिंह, रामविलास शर्मा, हरिवंश राय बच्चन, फणीश्वर नाथ रेणु, राहुल सांकृत्यायन, हरिशंकर परसाई, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि) की रचनाओं और भावनात्मक दृष्टि प्रदान करना।
- आधुनिक हिन्दी गद्य की प्रासंगिकता, सामाजिक सरोकार, मानवीय मूल्य और साहित्यिक चेतना से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
- विद्यार्थियों में लेखन-कौशल, अभिव्यक्ति-शक्ति तथा भाषा की सृजनात्मक को विकसित करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- हिंदी गद्य के कथा साहित्य से भिन्न अन्य गद्य विधाओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
- विभिन्न हिंदी की कथेतर विधाओं के स्वरूप का ज्ञान होगा।
- युगीन संदर्भों के आलोक में कथेतर गद्य विधाओं को जान सकेंगे।
- इसके अध्ययन से विद्यार्थी व्यक्तियों, स्थानों, प्रकृति एवं पर्यावरण से परिचित हो सकेंगे।
- गंभीर भावचिंतन, हास्य और मनोरंजन से जुड़कर लाभान्वित होंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – कथेतर गद्य : आशय और विधाएं

- संस्मरण
- रेखाचित्र
- जीवनी
- आत्मकथा
- यात्रावृत्तांत
- रिपोर्टाज
- पत्र लेखन
- डायरी
- व्यंग्य

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 – प्रमुख निबंध

- भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- मित्रता – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- मजदूरी और प्रेम – सरदार पूर्ण सिंह
- भारत की सांस्कृतिक समस्या – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

– 01 क्रेडिट

इकाई 3 – प्रमुख रचनाएँ

- संस्मरण: सुभद्रा कुमारी चौहान (पथ के साथी – महादेवी वर्मा)
- रेखाचित्र: बलदेव सिंह, सरजू मैया (माटी की मूरतें – रामवृक्ष बेनीपुरी)
- रिपोर्टाज: एकलव्य के नोट्स – (फणीश्वर नाथ रेणु)
- यात्रावृत्तांत: अथातो घुम्मकड़ जिज्ञासा (राहुल सांकृत्यायन)
- व्यंग्य: भोलाराम का जीव (हरिशंकर परसाई)

– 01 क्रेडिट

इकाई 4 – जीवनी और आत्मकथा

- निराला की साहित्य साधना (भाग-1 से 'नये संघर्ष' अध्याय) – रामविलास शर्मा
- नीड़ का निर्माण फिर (आरंभिक 25 पृष्ठ) – हरिवंश राय बच्चन

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- गद्य की नई विधाओं का विकास, माजदा असद
- गद्य की पहचान, अरूण प्रकाश
- डा० भदन्त आनंद कौशल्यायन जीवन दर्शन, भदन्त सावंगी मेधकर
- हिंदी का गद्य विन्यास और विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी
- हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी
- हिंदी गद्य रूप सैद्धांतिक विवेचन, निर्मला देवी श्रीवास्तव
- हिंदी निबंध उद्भव और विकास, हरिचरण शर्मा
- हिंदी का आधुनिक यात्रा साहित्य, प्रतापपाल शर्मा

कोड – MJ - 15

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- छात्रों को हिंदी भाषा के व्यावहारिक और प्रयोजनमूलक रूप से परिचित कराना।
- राजकीय, गैर-सरकारी, व्यापारिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग की उपयोगिता बताना।
- अनुवाद, कार्यालयी लेखन, पत्राचार, विज्ञापन तथा जनसंचार माध्यमों में हिंदी के प्रयोग से छात्रों को दक्ष बनाना।
- हिंदी को रोजगार, व्यवसाय और दैनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग करने योग्य बनाना।
- छात्रों में भाषायी कौशल, लेखन क्षमता, व्यावसायिक योग्यता तथा संवाद कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- प्रयोजन मूलक हिंदी की उपयोगी जानकारी प्राप्त कर छात्र रोजगार के सरकारी तथा गैरसरकारी क्षेत्रों के लिए हिंदी के प्रयोग में दीक्षित हो सकेंगे।
- हिंदी भाषा और उस के विविध प्रयोगों की जानकारी प्राप्त कर छात्र राजभाषा हिंदी के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।
- पारिभाषिक शब्दावली के माध्यम से छात्र प्रयोजन मूलक हिंदी के वैशिष्ट्य को समझ सकेंगे।
- छात्र कामकाज से संबंधित पत्र लेखन में सक्षम हो सकेंगे।
- विज्ञापन लेखन का कौशल प्राप्त कर छात्र विज्ञापन एजेंसियों में रोजगार पा सकेंगे।
- छात्रों में अनुवाद कार्य की समझ और अनुवाद कार्य करने की क्षमता विकसित हो सकेगी।
- छात्रों में भाषा का मौखिक और लिखित कौशल का संवर्धन हो सकेगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूप और संभावनाएँ
 - सामान्य हिंदी, साहित्यिक हिंदी तथा प्रयोजनमूलक हिंदी
 - प्रयोजनमूलक हिंदी : अभिप्राय व विशेषताएँ
 - रोजगार और प्रयोजन मूलक हिंदी
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रयुक्ति और क्षेत्र
 - कार्यालयी हिंदी का प्रयोग, क्षेत्र और स्वरूप
 - प्रशासनिक हिंदी
 - वाणिज्य, व्यापार और बैंकिंग के क्षेत्र में हिंदी
 - विधि के क्षेत्र में हिंदी
 - वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी
 - व्यवसायिक हिंदी
 - संचार माध्यम की हिंदी
 - अन्य ज्ञानानुशासनों में हिंदी

इकाई – 2 पारिभाषिक शब्दावली

- पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ और स्वरूप
- शब्दावली निर्माण और विकास की आवश्यकता
- शब्दावली निर्माण व प्रक्रिया
- 100 पारिभाषिक शब्द

– 01 क्रेडिट

इकाई – 3 कार्यालयी और जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन

- सरकारी पत्र लेखन
- अर्ध सरकारी पत्र लेखन
- व्यावसायिक पत्र लेखन
- कार्यालयादेश
- अधिसूचना
- प्रेस विज्ञप्ति/प्रेस नोट
- टिप्पण और प्रारूपण
- बैठक और प्रतिवेदन
- जनसंचार-माध्यम के विविध आयाम
- विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी (प्रिंट, टेलीविजन और सिनेमा)
- समाचार लेखन और संपादन
- उद्घोषणा लेखन

– 01 क्रेडिट

इकाई – 4 अनुप्रयोग

- कंप्यूटर का अनुप्रयोग
- अनुवाद (प्रकार और महत्व)
- कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- प्रयोजन मूलक कामकाजी हिंदी – डॉ० कैलाशचंद्र भाटिया
- अनुवाद कला – डॉ० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
- प्रयोजन मूलक हिंदी : विविध परिदृश्य – डॉ० रमेशचन्द्र त्रिपाठी
- प्रशासन में राजभाषा हिंदी – डॉ० कैलाशचंद्र भाटिया
- प्रयोजन मूलक हिंदी के विविध रूप – डॉ० राजेन्द्र मिश्र/राकेश शर्मा
- भाषा के विविध रूप और अनुवाद – प्रो० कृष्ण कुमार गोस्वामी
- प्रयोजन मूलक हिंदी – डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव
- इग्नू की अध्ययन सामग्री

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त होगा ।
- विद्यार्थी भारत को एक सूत्र में बांधनेवाली हिंदी भाषा की विविध बोलियों से परिचित हो सकेंगे ।
- विद्यार्थियों को हिंदी की भाषिक इकाइयों दृश्य, ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा ।
- हिंदी के अर्थ-विकास की जानकारी प्राप्त हो सकेगी ।
- वैज्ञानिक और उपयोगी लिपि 'देवनागरी' का अपेक्षित ज्ञान प्राप्त होगा ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1 हिंदी भाषा का उद्भव और विकास ।

– 01 क्रेडिट

इकाई – 2 हिंदी की बोलियाँ – पूर्वी और पश्चिमी हिंदी ।

– 01 क्रेडिट

इकाई – 3 राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं संपर्कभाषा के रूप में हिंदी ।

– 01 क्रेडिट

इकाई – 4 प्रयोजनमूलक हिंदी, पारिभाषिक शब्दावली, अनुवाद प्रक्रिया ।

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ :-

- हिंदी भाषा, डॉ. हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, नई दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग, दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिंदी : उद्भव, विकास और रूप – डॉ. हरदेव बाहरी, किताब महल, प्रयागराज
- हिंदी भाषा का उद्भव और विकास – उदय नारायण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- हिंदी भाषा का इतिहास – भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएँ और समाधान, देवेन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका, कैलाश नाथ पांडेय, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- राजभाषा हिंदी, भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
- राष्ट्रभाषा हिंदी, राहुल सांकृत्यायन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

सप्तम समसत्र (Seventh Semester)

सामान्य निर्देश/अंक

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

1. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
3. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
4. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'ख' –	03 X 15 =	45 अंक
कुल –		50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक – 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

1. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
4. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
5. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय) –	02 X 05 =	10 अंक
खंड 'ख' –	04 X 15 =	60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –		20 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति –		05 अंक
कुल –		100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

कोड – MJ - 16

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को शोध की मूलभूत अवधारणाओं, स्वरूप और उद्देश्यों की स्पष्ट समझ प्रदान करना।
- विभिन्न शोध पद्धतियों एवं तकनीकों से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
- शोध कार्य हेतु आवश्यक स्रोतों एवं सामग्री-संग्रहण की विधियों की जानकारी देना।
- शोध के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों में संतुलन स्थापित कर विद्यार्थियों को स्वतंत्र अनुसंधान के लिए सक्षम बनाना।
- आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर साहित्यिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक संदर्भों में शोध की दिशा प्रदान करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- शोध प्रविधि के अध्ययन से अनुसंधान का अर्थ उसकी परिभाषा एवं उसके अभिप्राय को जान सकेंगे।
- शोध प्रविधि अध्ययन के विविध प्रणालियों से परिचित कराएगा।
- यह विविध पद्धतियों को जानने में सहायक होगा।
- शोध प्रविधि शोध कार्य की प्रारंभिक बोध एवं शोध कार्य की दिशा में अग्रसर होने में सहायक होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - अनुसंधान : अवधारणा और स्वरूप

- अनुसंधान का सामान्य परिचय
- अनुसंधान के लिए प्रयुक्त पर्याय
- अनुसंधान का उद्देश्य
- अनुसंधान के प्रकार

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 - अनुसंधान की विविध पद्धतियाँ :

- विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक
- गुणात्मक
- तुलनात्मक
- मात्रात्मक
- आगमनात्मक
- निगमनात्मक
- मिश्रित

– 01 क्रेडिट

इकाई 3 - अनुसंधान : स्रोत एवं सामग्री संकलन

- ऐतिहासिक (पुरातात्विक)
- लिखित सामग्री
- पांडुलिपियाँ
- जनगणना लेखन
- राजपत्र सरकारी आँकड़े

– 01 क्रेडिट

इकाई 4 - अनुसंधान : अनुप्रयोग

- अनुसंधान-स्रोत और सामग्री संकलन की नैतिकता
- प्रपत्र, लेख, कार्यशाला, संगोष्ठी, सम्मेलन और परिसंवाद
- अनुसंधान-प्रपत्र और अनुसंधान-प्रबंध-लेखन के लिए आवश्यक रूपरेखा
- अनुसंधान-प्रबंध-लेखन : भूमिका, विषय प्रवेश, अध्यायों का वर्गीकरण
- पाद टिप्पणियाँ
- निष्कर्ष और उपसंहार
- संदर्भ व सहायक ग्रंथ-सूची
- परिशिष्ट

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- शोध और सिद्धांत – डॉ० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शोध संस्कृति – संजय नवले, अमन प्रकाशन, कानपुर
- साहित्यिक अनुसंधान के आयाम – रविन्द्र कुमार जैन, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शोध प्रविधि – विनयमोहन शर्मा, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शोध प्रस्तुति – उमा पाण्डेय, नेशनल पेपर बैक्स, नई दिल्ली
- अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया – राजेन्द्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
- अनुसंधान प्रविधि – डॉ० एस०एन० गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

कोड – MJ - 17

अंक – 100 (वाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक स्थितियों से परिचित कराना।
- राष्ट्रीयता का विकास करना।
- स्वाधीनता बोध कराना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- विद्यार्थी भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक स्थितियों से परिचित हो सकेंगे।
- राष्ट्रीयता का विकास होगा।
- स्वाधीनता बोध होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – भारतबोध की संकल्पना

- भारतीय दृष्टि से भारत का अनुशीलन : प्राच्यवाद, भारतविद्या, भारतबोध
- भारतीय समाज एवं संस्कृति
- भारतीय जीवन-दृष्टि, भारत का लोक और लोकप्रज्ञा
- वि-उपनिवेशीकृत भारतीय चित्त

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 – भारतीय साहित्य और भारतबोध

- वैदिक वांग्मय, पुराण एवं उपनिषद्, संगम साहित्य, बौद्ध एवं जैन साहित्य – संक्षिप्त परिचय
- भारतीय भक्ति काव्य – सामान्य परिचय
- भारतीय पुर्नजागरण/नवजागरण एवं भारतीय साहित्य
- राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन एवं भारतीय साहित्य

– 01 क्रेडिट

इकाई 3 – हिंदी साहित्य और भारतबोध – 1 (पाठ आधारित)

- राम-भरत संवाद – अयोध्या कांड (रामचरितमानस)
- भारतीय सामाजिक संरचना से संबंधित कविता – सखि वे
- भारतीय संस्कृति से संबंधित कविता – कालीदास सच सच बतलाना (नागार्जुन)
- भारतीय जीवन-दृष्टि/दर्शन से संबंधित कविता – अरुण यह मधुमय देश हमारा (चन्द्रगुप्त), तुमुल कोलाहल कलह में, मैं हृदय की बात रे मन (कामायनी)

– 01 क्रेडिट

इकाई 4 – हिंदी साहित्य और भारतबोध – 2 (पाठ आधारित)

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र – हिंदी नवजागरण : भारत जननी (नाटक)
- प्रेमचंद – राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन : यह मेरी मातृभूमि है (कहानी)
- विष्णुकांत शास्त्री – वि-उपनिवेशिकरण की प्रक्रिया : तुलसी के लिए हेरि (निबंध)
- शिवपूजन सहाय – मुंडमाल (कहानी)

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ

- दिनकर, रामधारी सिंह संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
- वर्मा, महादेवी भारतीय संस्कृति के स्वर, राजपाल एंड संस, दिल्ली।
- अग्रवाल, वासुदेवशरणय भारत की मौलिक एकता, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली।
- अग्रवाल, वासुदेवशरणय राष्ट्र, धर्म और संस्कृति, हनुमानप्रसाद शुक्ल (संपादक), प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली।
- उपाध्याय, भगवतशरणय भारत की संस्कृति की कहानी, राजपाल एंड संस, दिल्ली।
- द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसादय मध्यकालीन धर्म साधना, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
- धर्मपालय भारतीय चित्त मानस एवं काल, पुनरुत्थान ट्रस्ट, अहमदाबाद, गुजरात।
- वर्मा, निर्मलय भारत और यूरोप: प्रतिश्रुति के क्षेत्र, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
- टंडन, डॉ. हरिहरनाथय वार्ता साहित्य, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश।
- शर्मा, डॉ. मालतीय वैदिक संहिताओं में नारी, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।
- दीपक, जे. साईय इंडिया अर्थात् भारत : उपनिवेशिकता, सभ्यता, संविधान, ब्लूमसबरी इंडिया।
- निगम, आदित्यय आसमां और भी हैंरू वैचारिक स्वराज के तकाजे, सेतु प्रकाशन, नयी दिल्ली।
- कुमार, चंदनय संत-भक्त परंपरा का भारतबोध, विश्वभारती पत्रिका, जुलाई-सितंबर 2024 अंक, पृष्ठ 9-17
- थरूर, शशिय अंधकार काल, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
- शुक्ल, रजनीश कुमारय भारतबोधरू सनातन और सामयिक, प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली।
- Coomaraswamy, Ananda K; Introduction to Indian Art, Munshiram Manohar Lal Publishers.
- Elliot & Dowson, Sir H M & Prof. John; The History of India, As Told by its Own

कोड – MJ - 18

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को झारखण्ड की सांस्कृतिक, भाषिक एवं साहित्यिक विविधता से परिचित कराना।
- झारखण्ड में हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं (कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, काव्येतर गद्य) का अध्ययन कराना।
- प्रमुख साहित्यकारों की रचनाओं के माध्यम से साहित्यिक परंपरा, समाज और जीवन मूल्यों की समझ विकसित करना।
- क्षेत्रीय संस्कृति, बोली-बानी और सामाजिक जीवन से जुड़े साहित्य को व्यापक हिंदी साहित्य से जोड़कर देखना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि, साहित्यिक संवेदनशीलता और अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- झारखण्ड की संस्कृति के साथ-साथ विद्यार्थी झारखण्ड में हिंदी एवं अन्य भाषाओं की स्थिति को समझ सकेंगे।
- झारखण्ड के हिंदी साहित्य, काव्य, उपन्यास, कहानी, नाटक एवं कथेतर गद्य से विद्यार्थी परिचित होंगे।
- झारखण्ड के प्रमुख साहित्यकारों से विद्यार्थी परिचित होंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 – झारखण्ड में भाषिक विविधता एवं हिंदी

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 – झारखण्ड का हिंदी साहित्य –

- कविता
- कहानी
- उपन्यास
- नाटक
- कथेतरसाहित्य

– 01 क्रेडिट

इकाई 3 –

- नाटक : सिद्धनाथ कुमार – अशोक
- उपन्यास : श्रवण कुमार गोस्वामी – जंगलतंत्रम

– 01 क्रेडिट

इकाई 4 –

- कविता : अनीता वर्मा – झारखण्ड
अनुज लुगुन – ग्लोब
- कहानी : पंकज मित्र – बेला की भू
रोज केरकेट्टा – पगहा जोरी-जोरी रे घाटो
योगेन्द्र नाथ सिन्हा – दुंभी हो

- कथेतर : यात्रावृत्तांत
 - डा० केदार सिंह — जहाँ अजनबी परिंदे
ने जगाया
 - डा० कृष्ण कुमार गुप्ता — बादलों के घेरे में
 - डा० सत्यप्रिय महालिका और भवेश कुमार
 - झारखण्ड के स्वतंत्रता सेनानी
 - सी० भास्कर राव — झक मारने की कला
 - अशोक प्रियदर्शी — खुला बाजार उर्फ झुमरी
तिलैया

— 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ —

- झारखण्ड इनसाइक्लोपीडिया, रणेन्द्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- विषयनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ हिंदी : कल और आज, डा० केदार सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- झारखण्ड का साहित्य एवं साहित्यकार, डा० विनोद कुमार, सफल प्रकाशन, राँची
- अनुसंधान प्रविधि — डॉ० एस०एन० गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

वैकल्पिक पाठ्यक्रम (ELECTIVE COURSE) – 03. कार्यालयी हिन्दी

कोड – EC– 03 (सप्तम या अष्टम समसत्र हेतु)

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- छात्र कार्यालयी हिन्दी के स्वरूप से परिचित होकर कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग में सक्षम हो सकेंगे ।
- ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान उनके हिन्दी कौशल संवर्धन में सहायक होगा ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 -	कार्यालयी हिन्दी का स्वरूप	- 01 क्रेडिट
इकाई 2 -	कार्यालयी हिन्दी का क्षेत्र	- 01 क्रेडिट
इकाई 3 -	कार्यालयी पत्राचार के विविध रूप कार्यालयी हिन्दी की समस्याएँ	- 01 क्रेडिट
इकाई 4 -	कार्यालयी हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली	- 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिन्दी – कृष्ण कुमार गोस्वामी
- प्रयोजनमूलक हिन्दी – माधव सोनटक्के
- प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका – कैलाशनाथ पाण्डेय
- प्रशासनिक हिन्दी – डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिन्दी – दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

कोड – AMJ – 1

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थी विशेष कार्य प्रयोजन में प्रयुक्त होने वाली हिंदी से परिचित हो सकेंगे।
- प्रशासनिक हिंदी के प्रयोग को जान सकेंगे।
- पारिभाषिक शब्दावलियों से परिचित हो सकेंगे।
- काम-काज की भाषा का व्यावहारिक बोध हो सकेगा।

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थी विशेष कार्य प्रयोजन में प्रयुक्त होने वाली हिंदी सीखेंगे।
- प्रशासनिक हिंदी का प्रयोग कर सकेंगे।
- पारिभाषिक शब्दावलियों का ज्ञान होगा।
- काम-काज की भाषा का व्यावहारिक प्रयोग कर सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम (क) –

इकाई 1	प्रयोजनमूलक हिन्दी – अभिप्राय, क्षेत्र एवं शैलियाँ, सामान्य हिन्दी एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी में अंतर	– 01 क्रेडिट
इकाई 2	प्रशासनिक या कार्यालयीय हिन्दी : टिप्पण, प्रारूपण, प्रतिवेदन, पत्र लेखन	– 01 क्रेडिट
इकाई 3	पारिभाषिक शब्दावली : अभिप्राय, निर्माण प्रक्रिया, निर्माण एवं प्रयोग की दिशा में आने वाली समस्याएँ और समाधान	– 01 क्रेडिट
इकाई 4	हिन्दी भाषा का आधुनिकीकरण, प्रौद्योगिकीकरण, मानकीकरण	– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी डा० दगल झाल्टे, 1685, दखनी एक, विधा बिहार दरियागंज, नई दिल्ली
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी स्वरूप और सभावनाएँ डा० अवधेश्वर अरुण, हंसराज प्रकाशन, आमगोला, मुजफ्फरपुर
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी का अध्ययन सं० डा० सुशीला गुप्ता एवं अन्य, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी विविध परिदृश्य डा० रमेश चन्द्र त्रिपाठी एवं डा० पवन अग्रवाल, अलका प्रकाशन, कानपुर
5. व्यावसायिक हिन्दी कुमार पुष्कर सिंह, क्लासिकल पब्लिशिंग, दिल्ली
6. राष्ट्रभाषा हिन्दी समस्याएँ और समाधान आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. व्यावहारिक हिन्दी ओमप्रकाश सिंह, पीताम्बर पब्लिशिंग कं०, नई दिल्ली

अथवा

कोड – AMJ – 1

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थी को उपन्यास की व्यापकता से परिचित कराया जाएगा।
- उपन्यास के भेद आदि का ज्ञान कराया जाएगा।
- कितने चौराहे उपन्यास के माध्यम से राष्ट्रप्रेम की भावना विकसित करना।
- धर्मो रक्षति उपन्यास के माध्यम से भारतीय संस्कृति का परिचय कराना।

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थी को उपन्यास की व्यापकता से परिचित हो सकेंगे।
- उपन्यास के भेद आदि का ज्ञान हो सकेगा।
- कितने चौराहे उपन्यास के माध्यम से राष्ट्रप्रेम की भावना विकसित होगी।
- धर्मो रक्षति उपन्यास के माध्यम से भारतीय संस्कृति से परिचित होंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम (ख) –

इकाई 1	उपन्यास : परिभाषा एवं तत्त्व, स्वतंत्रता-पूर्व के हिन्दी उपन्यास	– 01 क्रेडिट
इकाई 2	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास, आंचलिक उपन्यास, महिला उपन्यासकार	– 01 क्रेडिट
इकाई 3	कितने चौराहे : फणीश्वरनाथ रेणु	– 01 क्रेडिट
इकाई 4	धर्मो रक्षति : आचार्य चतुरसेन शास्त्री	– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद त्रिभुवन सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
3. हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग त्रिभुवन सिंह
4. उपन्यास का काव्यशास्त्र बच्चन सिंह
5. प्रगतिवाद और नागार्जुन के उपन्यास कृष्ण कुमार गुप्ता, नेशनल पब्लिशिंग कं० दिल्ली
6. शेखर एक जीवनी विविध आयाम राजकमल राय
7. शेखर एक जीवनी पर व्याख्यान ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव
8. हिन्दी उपन्यास एक अंतर्गता रामदरश मिश्र
9. आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास इन्द्रनाथ मदान

कोड – RC – 1

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

End Semester Examination – 50 Marks

Tern Paper – 25 Marks

Internal Examination : – 20 Marks (Written) + 5 Marks (Day-to-day Assessment)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों में शोध के प्रति अकादमिक दृष्टिकोण तथा रुचि विकसित करना।
- शोध प्रस्ताव (Research Proposal) एवं योजना बनाने की प्रक्रिया को समझाना।
- शोध के विभिन्न चरणों – शीर्षक, प्रस्तावना, समस्या कथन, सीमांकन, कार्य-योजना की जानकारी प्रदान करना।
- शोध पद्धति एवं तकनीकों का प्रयोग करना सिखाना।
- संदर्भ ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाओं और इंटरनेट के स्रोतों से शोध सामग्री संकलित करने की क्षमता विकसित करना।

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में शोध के प्रति अभिरुचि उत्पन्न होगी।
- विद्यार्थियों को शोध तैयार करने में सहायता प्राप्त होगी।
- शोध लेखन की तकनीक जान सकेंगे।
- शोध संबंधी तकनीकों का सूक्ष्म बोध हो सकेगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - (क) शीर्षक (ख) प्रस्तावना (ग) साहित्य की प्रारंभिक समीक्षा	– 01 क्रेडिट
इकाई 2 - (क) समस्या कथन (ख) शोध का उद्देश्य (ग) शोध परिकल्पना	– 01 क्रेडिट
इकाई 3 - (क) शोध सीमांकन (ख) शोध प्रविधि (ग) शोध का महत्व	– 01 क्रेडिट
इकाई 4 - (क) कार्य योजना (ख) संभावित अध्यायीकरण (ग) परिशिष्ट : आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाएँ, इंटरनेट एवं अन्य	– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- शोध और सिद्धांत – डॉ० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शोध संस्कृति – संजय नवले, अमन प्रकाशन, कानपुर
- साहित्यिक अनुसंधान के आयाम – रविन्द्र कुमार जैन, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शोध प्रविधि – विनयमोहन शर्मा, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शोध प्रस्तुति – उमा पाण्डेय, नेशनल पेपर बैक्स, नई दिल्ली
- अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया – राजेन्द्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
- अनुसंधान प्रविधि – डॉ० एस०एन० गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- हिंदी शोध समस्या और समीक्षा – डॉ० जोगेश कौर, अमन प्रकाशन, कानपुर
- शोध प्रविधि – वंदना बोहरा, अमन प्रकाशन, कानपुर

अष्टम समसत्र (Eighth Semester)

सामान्य निर्देश/अंक

क्रेडिट – 02, कुल अंक – 50

1. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे।
3. दिए गए खंड 'क' में पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
4. दिए गए खंड 'ख' में पांच प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'ख' –	03 X 15 =	45 अंक
कुल –		50 अंक

क्रेडिट – 04 कुल अंक – 100

(बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

1. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय प्रकार के होंगे।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
4. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।
5. दिये गये खंड 'ख' में छह में से चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड 'क' अनिवार्य (वस्तुनिष्ठ) –	05 X 01 =	05 अंक
खंड 'क' (लघूत्तरीय) –	02 X 05 =	10 अंक
खंड 'ख' –	04 X 15 =	60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –		20 अंक
सतत मूल्यांकन (दैनिक गतिविधियाँ) सह उपस्थिति –		05 अंक
कुल –		100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वे ही अंक उन विद्यार्थियों के वास्तविक अंक होंगे तथा उन्हें ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जायगा।

कोड – MJ - 19

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- भारतीय साहित्य की अवधारणा से परिचित कराना।
- भारत की भौगोलिक, भाषिक और सांस्कृतिक विविधता परिचय देना।
- भारतीय सांस्कृतिक बोध के विकास का परिचय कराना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- भारतीय साहित्य के अध्ययन से सांस्कृतिक समझ विकसित होगी।
- भारतीय सांस्कृतिक विविधता में निहित एकता की समझ विकसित होगी।
- भारतीय साहित्यिक परंपरा के विकास की समझ विकसित होगी।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 - संस्कृत, असमिया, बांग्ला, उड़िया, गुजराती, मराठी, उर्दू

– 01 क्रेडिट

इकाई 2 - पंजाबी, कश्मीरी, सिंधी, मैथिली, तमिल, कन्नड़, तेलगू, मलयालम

– 01 क्रेडिट

इकाई 3 - वाल्मीकि—‘सप्तपर्ण’ : रामकाव्य का जन्म : पृष्ठ –115–119 में महादेवी वर्मा कृत अनुवाद

– 01 क्रेडिट

इकाई 4 - कालिदास—‘उत्तरमेघ’ : भगवतशरण उपाध्याय द्वारा संपादित ‘नागार्जुन चुनी हुई रचनाएँ’ पुस्तक से, पृष्ठ–345–349, छंद सं०–22–27

– 01 क्रेडिट

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को संचार और जनसंचार के विविध रूपों से परिचित कराना।
- पारंपरिक तथा आधुनिक मीडिया माध्यमों की संरचना, विकास और योगदान को समझाना।
- सोशल मीडिया की भूमिका, स्वरूप तथा उसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों की जानकारी देना।
- विद्यार्थियों में मीडिया लेखन की रचनात्मकता तथा भाषा की शक्ति को विकसित करना।
- विज्ञापन और संपादकीय लेखन जैसे प्रायोगिक पक्षों से अवगत कराना।
- विद्यार्थियों को मीडिया जगत में रोजगारपरक अवसरों और चुनौतियों से परिचित कराना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :

- मीडिया के विविध रूपों से परिचित होने पर छात्र मीडिया के क्षेत्र में रोजगार के नये अवसर तलाश सकेंगे।
- मीडिया लेखन के विविध आयाम छात्रों की सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने की अवसर प्रदान करेंगे।
- विज्ञापन लेखन छात्रों को विज्ञापन की संदेश रचना में दक्षकर विज्ञापन एजेंसियों में छात्रों के रोजगार की संभावनाओं को बढ़ायेगा।
- मीडिया की भाषा के विविध रूपों की समझ छात्रों को भाषा की शक्ति और सामर्थ्य से परिचित करायेगी।
- न्यूमीडिया की सही समझ छात्रों को समाज के साथ सकारात्मक संवाद स्थापित करने की दिशा में प्रवृत्त कर सकेंगी।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई – 1 संचार और जनसंचार

- जनसंचार माध्यमों का परिचय
- विकास के चरण
- पारंपरिक एवं आधुनिक जनमाध्यम
- स्वाधीनता पूर्व और स्वाधीनता के बाद का मीडिया
- मीडिया के विविध रूप और उनकी उपयोगिता –
(क) प्रिंट मीडिया
(ख) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया – रेडियो, टेलीविजन और फिल्में

– 01 क्रेडिट

इकाई – 2 सोशल मीडिया

- सोशल मीडिया से अभिप्राय
- सोशल मीडिया के विविध रूप
- सोशल मीडिया के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव, छद्म समाचार (फेक न्यूज)

– 01 क्रेडिट

इकाई – 3 मीडिया लेखन के सृजनात्मक आयाम एवं भाषा

- समाचार लेखन
- संपादकीय लेखन
- स्तंभ लेखन
- फीचर लेखन
- साक्षात्कार
- समीक्षा (पुस्तक, फिल्म, नाटक, कला प्रदर्शनी)
- समाचार पत्रों की भाषा
- टेलीविजन की भाषा
- रेडियो की भाषा
- सोशल मीडिया की भाषा

– 01 क्रेडिट

इकाई – 4 विज्ञापन : अवधारणा और स्वरूप

- विज्ञापन का उद्देश्य और महत्व
- विज्ञापन लेखन के विविध पक्ष एवं आयाम

– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- विज्ञापन माध्यम एवं प्रचार – डॉ० विजय कुलश्रेष्ठ/प्रतुलअथडिया
- जनसंचार माध्यम : विविध आयाम – बृज मोहन गुप्त
- जनमाध्यम : संप्रेषण और विकास – देवेन्द्र इस्सर
- हिंदी पत्रकारिता : कल आज और कल – सं० सुरेश गौतम
- मीडिया की भाषा – डॉ० वसुधा गाडगिल
- टेलीविजन की दुनिया – प्रभु झिंगरन
- पत्र संपादन कला – नन्द किशोर त्रिखा

वैकल्पिक पाठ्यक्रम (ELECTIVE COURSE) – 03. कार्यालयी हिन्दी

कोड – EC– 03 (सप्तम या अष्टम समसत्र हेतु)

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- छात्र कार्यालयी हिन्दी के स्वरूप से परिचित होकर कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग में सक्षम हो सकेंगे ।
- ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान उनके हिन्दी कौशल संवर्धन में सहायक होगा ।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

इकाई 1 -	कार्यालयी हिन्दी का स्वरूप	- 01 क्रेडिट
इकाई 2 -	कार्यालयी हिन्दी का क्षेत्र	- 01 क्रेडिट
इकाई 3 -	कार्यालयी पत्राचार के विविध रूप कार्यालयी हिन्दी की समस्याएँ	- 01 क्रेडिट
इकाई 4 -	कार्यालयी हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली	- 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ –

- प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिन्दी – कृष्ण कुमार गोस्वामी
- प्रयोजनमूलक हिन्दी – माधव सोनटक्के
- प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका – कैलाशनाथ पाण्डेय
- प्रशासनिक हिन्दी – डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिन्दी – दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

कोड – AMJ - 2

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- अनुवाद लेखन के महत्व को समझाना।
- अनुवाद की परिभाषा क्षेत्र आदि बताना।
- अनुवाद के भेद का परिचय देना।
- अनुवाद करने की कला विकसित करना।

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- अनुवाद लेखन के महत्व को समझ सकेंगे।
- अनुवाद की परिभाषा क्षेत्र आदि जान सकेंगे।
- अनुवाद के भेद का परिचय प्राप्त होगा।
- अनुवाद करने की कला विकसित होगी।

निर्धारित पाठ्यक्रम (क) –

- | | | |
|--------|--|--------------|
| इकाई 1 | अनुवाद की परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र एवं सीमाएँ, अनुवाद के भेद एवं समस्याएँ | – 01 क्रेडिट |
| इकाई 2 | अनुवाद की प्रक्रिया, अनुवाद के उपकरण, अनुवाद की शैली, अनुवादक के गुण | – 01 क्रेडिट |
| इकाई 3 | साहित्यिक अनुवाद, कार्यालयीन अनुवाद, वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का अनुवाद, विधि में अनुवाद | – 01 क्रेडिट |
| इकाई 4 | i) हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद
ii) अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद | – 01 क्रेडिट |

सहायक ग्रंथ :

1. अनुवाद : सिद्धांत एवं स्वरूप डा० मनोहर सराफ एवं डा० शिवाकांत गोस्वामी
2. अनुवाद विज्ञान डा० बालेन्दुशेखर तिवारी
3. अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और सिद्धि अवधेश मोहन गुप्त, राष्ट्रभाषा प्रकाशन, दिल्ली
4. प्रारंभिक अनुवाद विज्ञान सिद्धांत और प्रयोग अवधेश मोहन गुप्त, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
5. वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ डा० भोलानाथ तिवारी
6. अनुवाद कला डा० भोलानाथ तिवारी
7. हिन्दी में व्यावहारिक अनुवाद डा० आलोक कुमार रस्तोगी
8. अनुवाद कला डा० एन० ई० विश्वनाथ अय्यर
9. काव्यानुवाद की समस्याएँ तिवारी एवं चतुर्वेदी

अथवा

कोड – AMJ - 2

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- कहानी के महत्व को समझाना।
- कहानी की विविध धाराओं से परिचित कराना।
- राष्ट्रप्रेम की भावना विकसित करने वाली कहानियों से परिचय कराना।
- भारतीय संस्कृति की भावना विकसित करने वाली कहानियों से परिचय कराना।

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थी कहानी के महत्व को जान सकेंगे।
- विद्यार्थी कहानी की विविध धाराओं से परिचित होंगे।
- विद्यार्थी राष्ट्रप्रेम की भावना विकसित करने वाली कहानियों को जान सकेंगे।
- विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति की भावना विकसित करने वाली कहानियों का ज्ञान होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम (ख) –

इकाई 1	कहानी : स्वतंत्रता-पूर्व की हिन्दी कहानी, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी	– 01 क्रेडिट
इकाई 2	पंच परमेश्वर – मुंशी प्रेमचंद हार की जीत – सुदर्शन	– 01 क्रेडिट
इकाई 3	राही – सुभद्रा कुमारी चौहान ताई – विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक	– 01 क्रेडिट
इकाई 4	मुंडमाल – शिवपूजन सहाय वापसी – उषा प्रियंवदा	– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ :

1. कहानी : नई कहानी – नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. हिन्दी कहानी की शिल्पविधि का विकास – लक्ष्मी नारायण लाल, साहित्य भवन, इलाहाबाद
3. नयी कहानी की भूमिका – कमलेश्वर
4. आधुनिक हिन्दी कहानी – लक्ष्मी नारायण लाल
5. कहानी के नये प्रतिमान – कुमार कृष्ण
6. हिन्दी कहानी परंपरा और प्रगति – डा० हरदयाल
7. कुछ कहानियाँ : कुछ विचार – विश्वनाथ त्रिपाठी
8. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति – देवीशंकर अवस्थी
9. हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में वर्ग चेतना – कुमारी आभा भट्ट

कोड — AMJ - 3

अंक — 100 (बाह्य — 75, आंतरिक — 25)

क्रेडिट — 04

समय — 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थी को जनसंचार की व्यापकता समझाना।
- विद्यार्थी को रेडियो, नाटक आदि लेखन से परिचित कराना।
- जनसंचार के विविध माध्यमों से अवगत कराना।
- कंप्यूटर का सामान्य ज्ञान विकसित करना।

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा —

- विद्यार्थी में जनसंचार की व्यापकता की समझ विकसित होगी।
- विद्यार्थी, रेडियो, नाटक आदि लेखन से परिचित हो सकेंगे।
- जनसंचार के विविध माध्यमों से अवगत होंगे।
- कंप्यूटर का सामान्य ज्ञान विकसित होगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम (क) —

इकाई 1	जनसंचार : अवधारणा, परिभाषा एवं प्रकार, संचार के स्वरूप, प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया	— 01 क्रेडिट
इकाई 2	रेडियो नाटक, रेडियो समाचार लेखन एवं वाचन, रेडियो फीचर, रेडियो वार्ता	— 01 क्रेडिट
इकाई 3	दूरदर्शन धारावाहिक, टेलीफिल्म, समाचार सकलन, संपादन एवं प्रस्तुतीकरण पटकथा लेखन	— 01 क्रेडिट
इकाई 4	कंप्यूटर का सामान्य परिचय, शब्दावली एवं उपयोगिता, इंटरनेट का सामान्य परिचय, प्रेस आयोग, प्रेस परिषद्	— 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ :

1. जनसंचार एवं पत्रकारिता श्रीनाथ शर्मा एवं भूपेन्द्र गौतम, आदित्य प्रकाशन, बीना (मध्य प्रदेश)
2. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक हर्षदेव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. फीचर लेखन स्वरूप और शिल्प मनोहर प्रभाकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. पटकथा लेखन : एक परिचय मनोहर श्याम जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. जनमाध्यम कानून और उत्तरदायित्व श्रीकान्त सिंह, सत्यम प्रकाशन, नई दिल्ली
6. नये जनसंचार माध्यम और हिन्दी प्रकाशन, नई दिल्ली सुधीश पचौरी एवं अचल शर्मा, राजकमल
7. भारतीय सिने सिद्धांत अनुपम ओझा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
8. मीडिया और बाजारवाद रामशरण जोशी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
9. जनसंचार इक्कीसवीं सदी सं० आदर्श कुमार वर्मा, भारती जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली
10. रेडियो-दूरदर्शन पत्रकारिता — हरिमोहन
11. जनसंचार : विविध आयाम बृजमोहन गुप्त

अथवा

कोड – AMJ - 3

अंक – 100 (बाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 04

समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को नाटक की परिभाषा, तत्त्व एवं भेद से अवगत कराना।
- विद्यार्थियों को कोणार्क नाटक का मूलभाव समझाना।
- विद्यार्थियों में जौहर की ज्योति नाटक के माध्यम से राष्ट्रप्रेम जगाना।
- विद्यार्थियों को अंजो दीदी नाटक के माध्यम से भारतीय सामाजिक स्थिति का बोध कराना।

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थी नाटक की परिभाषा, तत्त्व एवं भेद से अवगत हो सकेंगे।
- विद्यार्थी कोणार्क नाटक का मूलभाव समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी जौहर की ज्योति नाटक के माध्यम से राष्ट्रप्रेम जान सकेंगे।
- विद्यार्थी अंजो दीदी नाटक के माध्यम से भारतीय सामाजिक स्थिति का बोध प्राप्त कर सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम (ख) –

इकाई 1	नाटक : परिभाषा, स्वरूप एवं तत्त्व, नाटक के भेद – समस्या नाटक, काव्य नाटक, रेडियो नाटक, नुक्कड़ नाटक, एब्सर्ड नाटक, एकांकी	– 01 क्रेडिट
इकाई 2	कोणार्क : जगदीश चन्द्र माथुर	– 01 क्रेडिट
इकाई 3	जौहर की ज्योति : रामकुमार वर्मा	– 01 क्रेडिट
इकाई 4	अंजो दीदी : उपेन्द्रनाथ अशक	– 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी नाटक – बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास – दशरथ ओझा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. साठोत्तरी हिन्दी नाटक – विजयकांत धर दुबे, नचिकेता प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी नाट्य साहित्य – ब्रजरत्न दास, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस
5. नाटकालोचन के सिद्धांत – सिद्धनाथ कुमार
6. हिन्दी नाटक – प्राक्कथन और दिशाएँ – विजयकांत धर दुबे, अनुभव प्रकाशन, कानपुर
7. हिन्दी पद्यनाटक : सिद्धांत और इतिहास – सिद्धनाथ कुमार
8. हिन्दी एकांकी की शिल्प विधि का विकास – सिद्धनाथ कुमार
9. आज का हिन्दी नाटक : प्रगति और प्रभाव दशरथ ओझा

कोड – RC – 2

अंक – 200 (प्रतिवेदन-50, शोध कार्य –100, मौखिकी-50)

क्रेडिट – 08

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को शोध कार्य के मूलभूत सिद्धांतों से अवगत कराना।
- अनुसंधान प्रक्रिया, पद्धति तथा शोध उपकरणों की जानकारी देना।
- विद्यार्थियों को फील्ड वर्क
- , परियोजना कार्य तथा प्रस्तुतीकरण की व्यावहारिक क्षमता विकसित कराना।
- साहित्य, समाज और संस्कृति से जुड़े शोध विषयों पर कार्य करने की योग्यता प्रदान करना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि, तार्किक विश्लेषण और विवेचनात्मक लेखन कौशल का विकास करना।
- शोध कार्य हेतु आवश्यक संसाधनों, संदर्भों और अनुशासनात्मक विधियों का ज्ञान कराना।
- शोध प्रबंधप्रोजेक्ट निर्माण, संपादन और प्रस्तुतीकरण की व्यावहारिक दक्षता विकसित करना।

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम (व्यावहारिक) परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थी शोध लेखन कार्य कर सकेंगे।
- विद्यार्थी शोध प्रस्ताव तैयार कर सकेंगे।
- विद्यार्थी अल्पकालिक कार्यानुभव प्राप्त कर सकेंगे।
- विषय चयन, परियोजना कार्य एवं क्षेत्र कार्य कर सकने में समर्थ होंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम –

- ❖ शोध कार्यानुभव – केन्द्रीय हिंदी निदेशालय
साहित्य अकादमी
दैनिक भास्कर, हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स
इंडिया टी०वी०, आजतक, जी न्यूज, न्यूज 18
- ❖ कार्य क्षेत्र –
 - (क) तैयारी – अनुसंधान प्रकल्प निर्माण
साहित्य की समीक्षा
 - (ख) मूल तत्व – घनिष्टता स्थापित करना
तथ्य संग्रहण
फील्ड डायरी निर्माण
फील्ड गैजेट्स (उपकरण)
 - (ग) उत्तर कार्य – तथ्य संकलन
विश्लेषण
प्रतिवेदन लेखन
 - (घ) प्रकार – साक्षात्कार, भाषा शैली, पुस्तकालय अनुसंधान, छात्र शिक्षण,
ग्रामीण अध्ययन, लोक साहित्य, लोक गीत
- ❖ परियोजना – विषय चयन – कथा साहित्य आधारित, लेखक केंद्रित, काव्य केंद्रित, नाटक केंद्रित
इतिहास केंद्रित, विमर्ष केंद्रित, युग केंद्रित, लोक साहित्य, लोकभाषा
/ बोली, काव्य सिद्धांत केंद्रित

सहायक ग्रंथ –

- शोध और सिद्धांत – डॉ० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शोध संस्कृति – संजय नवले, अमन प्रकाशन, कानपुर
- साहित्यिक अनुसंधान के आयाम – रविन्द्र कुमार जैन, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली
- लोक साहित्य और संस्कृति – डॉ० दिनेश्वर प्रसाद, epustakalay.com
- हिंदी शोध समस्या और समीक्षा – डॉ० जोगेश कौर, अमन प्रकाशन, कानपुर
- साहित्य चिंतन समीक्षा और शोध – डॉ० मधुकर पाडवी, अमन प्रकाशन, कानपुर
- सर्वेक्षण एवं क्षेत्र कार्य (भाग-1 एवं 2) – डॉ० बी०सी० पुनामिया एवं जैन, लक्ष्मी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
- क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विभाग योग-भगवद्गीता (अध्याय-13)